29

पर्यटन का विकास

29.1 भूमिका

पिछले पाठ में हम पर्यटन का अर्थ और पर्यटन के प्रकारों तथा इनके उद्देश्यों के विषय में पढ़ चुके हैं। पर्यटन के संसाधनों के आकार और महत्व पर भी विचार किया जा चुका है। इससे पहले पाठ की समाप्ति, आज के युग में पर्यटन की प्रासंगिकता पर संक्षिप्त टिप्पणी के साथ की गई थी। इस पाठ में हम पर्यटन और पर्यटकों स्थलों के विकास और विभिन्न प्रदेशों में उनके महत्व का विस्तार से अध्ययन करेंगें।

29.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप :

- पर्यटन के विकास में सहायक कारणों और कारकों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- अनेक पर्यटक-स्थलों का विभिन्न प्रकारों में वर्गीकरण कर सकेंगे।
- पर्यटन केन्द्रों की लोकप्रियता के आधार पर विभिन्न प्रदेशों को मिलने वाले लाभों के विषय में बता सकेंगे।

29.3 विकास के कारण और कारक

औद्योगिक क्रान्ति से सामाजिक और आर्थिक जीवन में अनेक परिवर्तन आए हैं। इन परिवर्तनों से पर्यटन को बहुत प्रोत्साहन मिला है। सामाजिक जीवन और अधिक धर्मनिरपेक्ष बन गया। धार्मिक उत्सवों से कई अर्थों में इसका संबंध कट गया, धीरे धीरे सवेतन अवकाश, वेतन भोगी लोगों का अधिकार बन गया। अब वेतनभोगी लोग अवकाश के दिनों को अपनी-अपनी रुचि के अनुसार बिताने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र हैं। उदाहरण के लिए जर्मनी में इस प्रकार के अवकाश के दिनों की संख्या सन् 1933 में केवल 3 थी जो 1988 में बढ़कर 35 हो गई तथा सन् 2000तक इसके 70 तक हो जाने की संभावना है। भारत में भी एक वेतन भोगी व्यक्ति एक वर्ष में लंबी अवधि के सवेतन अवकाश के रूप में 30 दिन

की छुट्टी ले सकता है। सरकारी कर्मचारियों को अपने परिवार सहित चार साल में एक बार भारत में कहीं भी जाने के लिए एल. टी. सी. दिया जाता है। गैर सरकारी क्षेत्रों में भी कर्मचारियों के लिए अवकाश यात्रा भत्तों का प्रावधान किया गया है। 65 वर्ष से अधिक आयु वाले वरिष्ठ नागरिकों को रेल भाड़े में 25 प्रतिशत की छूट दी जाती है। विमान यात्रा में भी उन्हें सामान्य श्रेणी में 50 प्रतिशत की छूट मिलती है। इनके अलावा सरकारी कर्मचारियों को दो साल में एकबार अपने गृह-नगर जाने के लिए ऐसी सुविधा दी जाती है। इन सभी कारकों ने स्वदेशी पर्यटन को बहुत प्रोत्साहन दिया है। निम्न तथा मध्यम आय वर्ग के लोगों को इससे बहुत लाभ हुआ है।

ऐसे अवकाश और छूट के कारण मनोरंजनात्मक पर्यटन के लिए लोगों को काफी समय मिलने लगा है। स्वेच्छा से घूमने की अधिकाधिक स्वतन्त्रता तथा अवकाश के दिनों की संख्या में बढ़ोतरी ऐसे निर्धारक कारक हैं, जिनसे लोगों की अपनी पसन्द के मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ी है। भारत में पर्यटन के विकास में लोगों की यह पहली सकारात्मक भूमिका है। अवकाश के अवसर हों, पर आय के साधन न हों तो भी पर्यटन का विकास नहीं हो सकता। सभी प्रकार के पर्यटकों के पास खर्च करने के लिए काफी रुपए होने चाहिए तथा परिवार के लिए आर्थिक जिम्मेदारियाँ भी कम से कम होनी चाहिए। तभी वे अपनी इच्छा के अनुसार समय और रुपए खर्च कर सकते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व थोड़ी संख्या में ही कुछ विलासप्रिय धनी व्यक्ति थे जो प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक आकर्षण के केन्द्रों में जाकर कुछ समय बिताने में समर्थ होते थे। लेकिन 1945 के बाद स्थिति बदली है। इसके बाद समाज के सभी वर्गों के लोग काफी संख्या में अपनी आय के स्तर तथा रूचि के अनुसार भ्रमण के लिए बाहर जाने लगे हैं। ऐसे लोग चाहते हैं कि वे कम से कम व्यय करके और कम से कम समय में अधिक से अधिक स्थानों में घुम सकें! ये लोग अक्सर विश्राम के लिये ली गई छुट्टियों का उपयोग, साहसिक यात्राओं, मनोरंजनात्मक खेलों और मनोरंजन के कार्यक्रमों के लिए भी कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति अकेले या समूह में भी यात्रा करते हैं। विमान सेवाओं के किरायों में कमी, यात्राओं के लिए अन्य प्रकार की छूट, सस्ते होटल तथा, तंबुओं के शिविरों में सस्ती आवास सुविधाओं ने भी पर्यटन को प्रोत्साहन दिया है। भारत ने पिछले दशक में पर्यटन के विकास की आवश्यकता के प्रति काफी ध्यान दिया है। इससे पर्यटन के विकास में काफी सहायता मिली है। भले ही विकास की दर धीमी रही है। संसार की समृद्धि में और संसार के पर्यटन में चोली-दामन का साथ है। यही कारण है कि भारत में विदेशी पर्यटक पश्चिमी दुनिया के विकसित अधिक आय वाले देशों से आते हैं। इन पर्यटकों की अपनी मुद्रा का मूल्य अधिक होता है, इसलिए इन्हें भारत में यात्रा करना बहुत सस्ता लगता है। इसके विपरीत यदि विकासशील देश बहुत गरीब हैं तो वह आगन्तुक पर्यटकों के परिवहन और अन्य सुविधाओं के विकास के लिए बहुत कम धनराशि व्यय कर पाता है।

आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत मध्यम दर्जे का विकाशील देश है। अतः वह तीसरी दुनिया विशेष रूप से अफ्रीका के देशों की तुलना में पर्यटन का अधिक विकास कर सकीं है। दूसरी ओर दक्षिण पूर्व एशिया के देश जैसे थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया और फिलीपाइन्स, इस मामले में भारत से बहुत आगे हैं। व्यक्तिगत स्तर पर उद्देश्य, फुरसत का होना, छुट्टी मनाने के लिए शारीरिक शक्ति, आय, शिक्षा तथा व्यक्ति गत आय को खर्च करने की स्वतन्त्रता ये सभी पर्यटन के विकास के लिए मिलकर

कार्य करते हैं। ये सभी **प्रेरक** शक्तियाँ हैं। इसी प्रकार कुछ **आकर्षक** शक्तियाँ भी है। इस प्रकार पर्यटन का विकास इन्हीं दोनों शक्तियों का ही परिणाम है। प्राकृतिक दृश्य भूमियों का सौन्दर्य, सांस्कृतिक केन्द्र तथा पर्यटकों के गन्तव्य स्थलों की अनुकूल जलवायु आदि आकर्षक शक्तियाँ हैं। जिस प्रदेश या स्थान पर इस प्रकार की विविध पर्यटक संसाधन होते हैं, वे पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जिस प्रदेश में जितनी अधिक प्रकार के पर्यटक संसाधन होंगे वहाँ उतने ही अधिक पर्यटक खिंचे चले आएंगे।

यदि कोई दो देश भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा व्यापारिक कारणों से एक दूसरे के निकट आगए हैं तो उनमें पर्यटकों का प्रवाह अधिक होगा। भारत के साथ व्यापार करने वाले देशों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। तकनीकी ज्ञान के आदान-प्रदान तथा सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए भी भारत अनेक देशों के साथ सहयोग कर रहा है। इससे पर्यटन के विकास को बढ़ावा मिल रहा है।

यह सही है कि भारत पूर्व और पश्चिम से आने वाले मार्गों के चौराहे पर स्थित है, लेकिन यह यूरोप और उत्तर अमेरीका के पर्यटक जनक विकसित देशों से दूर पड़ता है। संसार के कुल पर्यटकों में से केवल 10 प्रतिशत ही ऐसे हैं, जो लम्बी दूरी वाले पर्यटन को पसन्द करते हैं। तीव्रगामी परिवहन के अभाव में ऐसा पर्यटन अधिक महँगा और अधिक समय साध्य है। भारत जैसे सुदूरस्थित विकासशील देशों में संसार के कुल पर्यटकों में से केवल 7 प्रतिशत ही आ पाते हैं। उच्च जीवन स्तर वाला आधुनिक पर्यटक तीव्रगामी और सुखद वायुयानों, रेलों और सड़क परिवहन के साधनों के द्वारा बड़ी जल्दी जल्दी यात्रा करना चाहता है। ऐसे परिवहन मार्ग पर्यटक जनक स्थानों और मनोरंजक पर्यटन के स्थानों या क्षेत्रों के मध्य प्रवेश की विश्वसनीय कड़ी है। पर्यटकों के लिए आवश्यक और उपयुक्त सुविधाएं जुटा कर भारत भारी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। लेकिन इस प्रकार की सुविधाओं का अभाव ही पर्यटन के धीमे विकास का प्रमुख कारण है।

पर्यटन के विकास को प्रोत्साहित करने वाले सकारात्मक कारकों के अलावा ऐसे नकारात्मक कारक भी हैं, जो पर्यटन के विकास में बाधा पहुंचाते हैं। सन् 1985 और 1988 के बीच दक्षिण एशिया में विदेशी पर्यटकों में हमारे देश का हिस्सा 60% था। लेकिन इसका मुख्य कारण हमारे पड़ोसी देशों की खराब और घटिया व्यावस्था थी। इनमें से अधिकतर हमसे कम विकसित तथा आकार में इतने छोटे हैं कि वे भारी संख्या में और लंबी अवधि के लिए पर्यटाकों को आकर्षित करने में असमर्थ हैं।

सन् 1988 में दिल्ली में हैजे की महामारी तथा कुछ समय पूर्व देश में प्लेग जैसे भयंकर रोग के प्रकोप के कारण अनेक पर्यटक अपने अपने देशों को वापस लौट गए। वायुयानों के टिकटों के तथा होटलों के आरक्षण किसी भी समय रद्द किये जा सकते हैं देखिए! संचार के तत्काल साधन किस प्रकार पर्यटन को एक साथ प्रोत्साहित और हतोत्साहित करते हैं। राजनीतिक अस्थिरता, देश के कुछ भागों में विद्रोह की स्थिति तथा आतंकवादियों द्वारा विदेशियों को बंधक बनाए जाने के कारण, प्रभावित क्षेत्रों में पर्यटकों का आगमन बहुत कम हो गया है। जम्मू-कश्मीर तथा उत्तर-पूर्व के राज्यों में ऐसा ही हुआ है।

कभी-कभी कीमतों में तेज वृद्धि, परिवहन की महँगाई तथा पेट्रोलियम उत्पादों की कमी से उत्पन संकट पर्यटन के विकास में रोड़ा बन जाते हैं। सारे देश की समृद्धि (जिसे कुल जनसंख्या के प्रतिव्यक्ति सकलराष्ट्रीय उत्पाद) के संदर्भ में नापा जाता है। समृद्धि से लाभाविन्त संपूर्ण जनसंख्या तथा राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामान्य दशाएँ दोनों प्रकार के देशों में पर्यटन के विकास को निर्धारित करती हैं।

- **औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप हुए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों ने भारत सहित सारे संसार में पर्यटन को प्रोत्साहन दिया है।**
- **अवकाश के दिनों की संख्या में वृद्धि, अधिक आय, पर्यटक संसाधनों के विकास की ओर अधिक ध्यान दिया जाना, परिवहन के तीव्रगामी साधनों का प्रावधान तथा अन्य सुविधाओं की उपलब्धि ऐसे सकारात्मक कारक हैं, जिन्होंने आधुनिक व्यापारिक पर्यटन के विकास में योगदान दिया है।**
- **नकारात्मक कारक भी समय-समय पर देश में पर्यटन के प्रवाह को अवरूद्ध करते हैं। जैसे महामारी, राजनैतिक अस्थिरता, आतंकवाद, असुरक्षा आदि।**

पाठगत प्रश्न 29.1

1. किन दो कारकों से स्वेदशी पर्यटन के विकास को प्रोत्साहन मिला है?
   (i)................................ (ii)............................
2. नीचे कोष्ठकों में दी गई सूची में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:
   (सुविधाओं, आय, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, मध्य, आकर्षक, प्रेरक)

(i) भारत में .... के अपर्याप्त विकास के कारण पर्यटन का विकास धीमा हो गया है।

(ii) देश का .... जितना अधिक होगा उतना ही अधिक होगा उस देश से पर्यटकों का प्रवाह

(iii) अवकाश के दिनों की संख्या के बढ़ जाने पर भी यदि अधिकतर लोगों की .... में वृद्धि नही हुई है तो इससे पर्यटन का विकास नहीं हो सकता।

(iv) यात्रा-पर्यटन..................और........... शक्तियों की अन्योन्यक्रियाओं का परिणाम हैं।

(iv) गरीब देशों की अपेक्षा केवल हमारे जैसे .... स्तर के विकासशील देश ही पर्यटन के विस्तार में सहायता दे सकते हैं।

3. पर्यटन के विकास को प्रभावित करने वाले तीन सकरात्मक कारकों के नाम बताइये।
   (i) ....
   (ii) ....
   (iii) ....

29.4 पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण

पर्यट स्थल अनेक प्रकार के हैं। पर्यटक स्थलों की विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में स्थिति, स्थिति की विविध विशेषताएँ तथा पर्यटकों के क्रियाकलापों की विविधता के कारण पर्यटक स्थल अनेक प्रकार के हो गए हैं। इनका वर्गीकरण इसलिए किया जाता है कि इनमें पर्यटकों के लिए उपलब्ध आकर्षणों और सुविधाओं का पता लगाया जा सके। लेकिन अनेक ऐसे पर्यटन केन्द्र हैं जो बहु-उद्देशीय है तथा जिनके आसपास पर्यटकों के लिए अनेक आकर्षण होते हैं। ऐसे केन्द्रों को पर्यटकों के लंबी अवधि तक ठहरने से बहुत लाभ होता है।

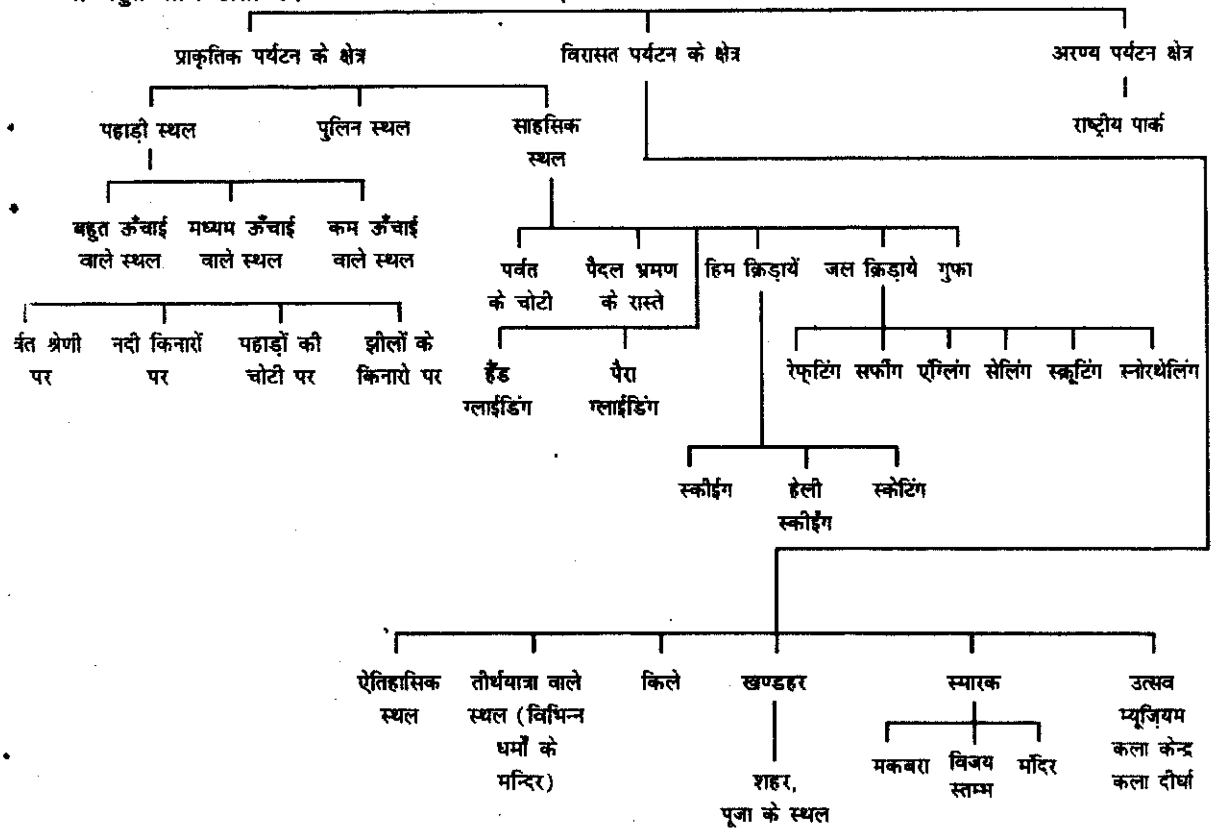

चित्र 29.1 पर्यटक क्षेत्र तथा पर्यटक स्थल

(क) पर्वतीय तथा पहाड़ी पर्यटकस्थल

ऐसे पर्यटक स्थल हमारे देश के लगभग सभी भागों में पाए जाते हैं। उत्तर में उच्च हिमालय के अलावा उत्तरपूर्व तथा दक्षिण में नीलगिरि के चारों ओर भी ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ हैं। विंध्याचल, सतपुड़ा, अरावली तथा पश्चिमी घाट में निम्न तथा मध्यम ऊँचाई की पहाड़ी श्रृंखलाएँ हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छोटी पहाड़ियाँ भी हैं। इसी कारण पंजाब और उड़ीसा को छोड़कर जिन राज्यों की भूमि मुख्यतः मैदानी है, वहाँ भी एक दो पहाड़ी पर्यटक स्थल है।

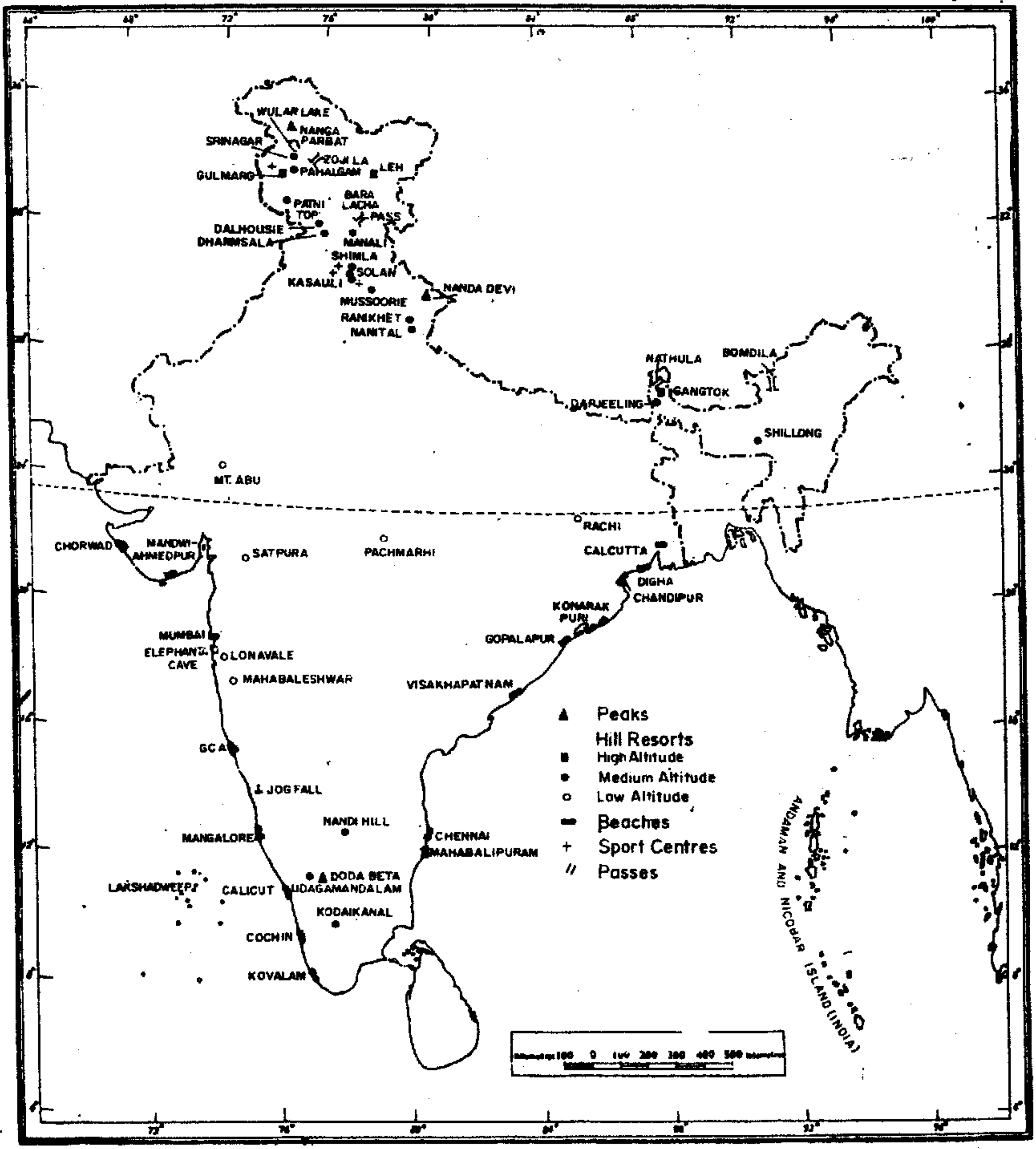

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1996.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher
© Government of India copyright 1996

चित्र 29.2 लोकप्रिय पर्वतशिखर, पहाड़ी पर्यटक स्थल तथा पुलिन

इनमें से कुछ पर्यटक स्थल अपेक्षाकृत अधिक विकसित और लोकप्रिय हैं। ऐसे अनेक स्थलों के भविष्य में महत्वपूर्ण बन जाने की संभावना है। कुछ ऐसे भी हैं जो अभी तक अविकसित पड़े हैं। ऊँचाई के अनुसार हम इन पहाड़ी नगरों को तीन वर्गों में रख सकते हैं

(i) कम ऊँचाई वाले पहाड़ी पर्यटक स्थल (समुद्र तल से 800 से 1200 मीटर)
(ii) मध्यम ऊँचाई के पहाड़ी पर्यटक स्थल (समुद्रतल से 1200 से 2100 मीटर)
(iii) अधिक-ऊँचाई वाले पर्यक स्थल (समुद्र तल से 2100 से 3500 मीटर)

दिए गए मानचित्र से स्पष्ट है कि इनमें से अधिकतर पर्यटक स्थल मध्यम ऊँचाई वाले हैं, कई निम्न ऊँचाई वाले तथा बहुत कम संख्या में अधिक ऊँचाई वाले हैं। इनमें से अधिकतर की जलवायु स्वास्थ्य वर्धक हैं। सुहावनी ग्रीष्मऋतु, वर्षा ऋतु में मानसूनी वर्षा और मृदुल शीतल शीत ऋतु इस जलवायु की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इनमें से कुछ पश्चिमी हिमालय में स्थित हैं। यहाँ शीत ऋतु में हिमपात होता है तथा कड़ाके की ठंड पड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में तपते गर्म मैदानों के निवासी यहाँ आकर राहत पाते हैं तथा शीतऋतु में मनोरंजनात्मक क्रीड़ाओं में रम जाते हैं।

इस पाठ के माध्यम से आपको यह जानकर अच्छा लगेगा कि कुछ ऐसे पहाड़ी पर्यटक स्थल है जिनके विषय में बहुत कम जानकारी है और जिनकी स्थिति सामान्य मानचित्रों में अंकित नहीं होती। इसे केवल संयोग ही कह सकते हैं कि वे कम लोकप्रिय हैं और बहुत कम विकसित हैं।

हरियाणा का 1000 मी. ऊँचा मोरनी पहाड़ी पर्यटक स्थल, असम के सिलचर जिले की उत्तरी कच्छार पहाड़ियों में स्थित 1657 मीटर ऊँचा हैफिलौंग, मणिपुर में इम्फाल के पूर्व में स्थित 1900 मी. ऊँचा उखरूल, दीमापुर इम्फाल मार्ग पर 1788 मी. ऊँचा माओ, आँध्र प्रदेश में तिरूमाला जाने वाले मार्ग पर स्थित 1265 मी. ऊँचा हौर्सले पहाड़ियाँ, केरल के पश्चिमी घाट में 1600 मी. ऊँचा मुन्नार, मुंबई के निकट 803 मी. ऊँचा अछूता प्राकृतिक सौन्दर्यवाला माथेरान गुजरात में सूरत के दक्षिण पूर्व में सहयाद्रि के दूसरे नंबर के सबसे ऊँचे पठार पर स्थित 873 मी. ऊँचा सपुतारा ऐसे अल्पज्ञात पहाड़ी पर्यटक स्थलों के उदाहरण हैं।

शिमला, दार्जिलिंग, गंगटोक या मसूरी, कटक पर बसे हैं। इन नगरों में खड़े होकर गहरी घाटियों और हिममंडित शिखरों के सौन्दर्य को एक साथ निहारा जा सकता है। कटक के समानान्तर पृष्ठ भूमि में विस्तृत वनों की हरियाली ने इनके सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिये हैं। यदि बड़े पैमाने पर काट कर वनों के आवरण को अनावृत भूमि में परिवर्तित कर दिया जाता है और उस पर कंक्रीट और लोहे की छड़ों से निर्मित भवनों के जंगल उग आते हैं, तो पर्यटक स्थलों के प्राकृतिक दृश्यों का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। खिली धूप में सुदूरवर्ती दृश्य जितने आकर्षक लगते हैं, उतने ही आकर्षक वे उन दिनों में भी दिखते हैं, जब काले कजरारे मेघ रहस्यमयी दृश्य भूमियों पर पूरी तरह से छा जाते हैं।

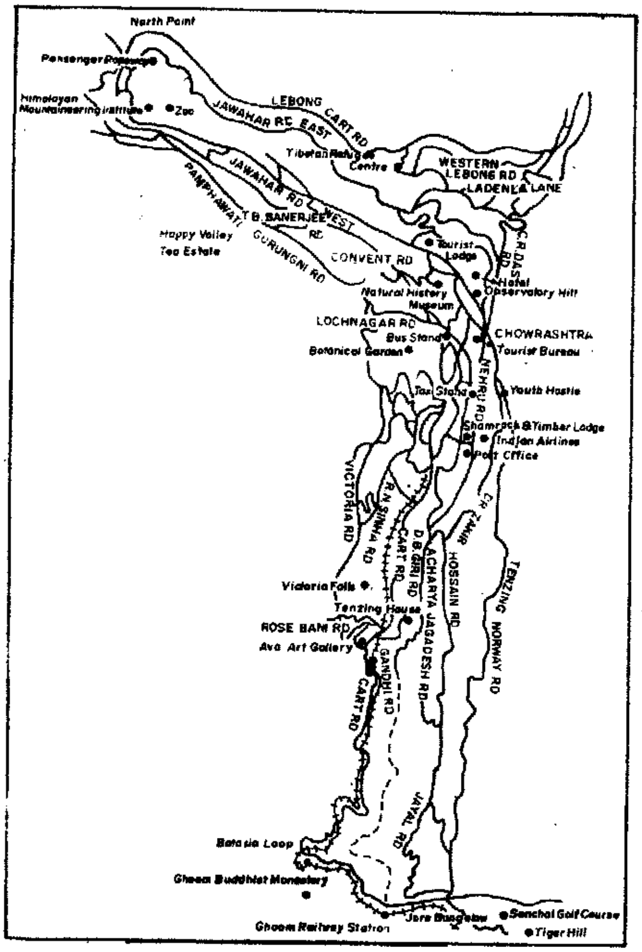

चित्र 29.3 दार्जिलिंग की कटक (रिज) पर स्थिति

कुछ पहाड़ी पर्यटक स्थल जैसे नैनीताल उदगमंडलम (ऊटी) और कोडइकैनाल, कटोरे जैसी आकृति वाली भूमि में चारों ओर पहाड़ियों से घिरी झीलों के किनारे बसे हैं। इनके ढालों पर उगे सघन वन झीलों के पानी तक पहुँच गए हैं। कुछ स्थान जैसे कश्मीर का श्रीनगर और तमिलनाडु में ऊटी में पहाड़ियाँ कुछ दूरी पर हैं ओर नगर चौड़ी खुली घाटी में या तरंगित घास भूमियों पर बसे हैं। राजस्थान में झील के किनारे बसा उदयपुर भी पर्यटक स्थल का अन्य उदाहरण है।

कुछ पर्यटक स्थल जैसे माउंट आबू, मोरनी, माथेरान, पंचमढ़ी, सपुतार और रांची पहाड़ियों की चौड़ी चोटियों पर या पठार के असमतल धरातल पर बसे हैं, जहाँ से हरी भरी घाटियों के दृश्य या वन्य दृश्य भूमियाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं। शिलांग और डलहौजी ऐसे नगर हैं, जो संकीर्ण घाटियों से विभक्त कुछ पहाड़ियों के समूह पर बसे हैं। हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला, धौलाधार से कांगड़ा घाटी की ओर निकले हुए चौरस चोटी वाले पर्वत स्कंध पर स्थित हैं।

पर्यटक प्रतिदिन कटक के एक छोर से दूसरे छोर तक या पहाड़ियों के चारों ओर बनी सड़कों पर लंबी दूरी की सैर पर निकल जाते हैं। नदी के किनारे स्थित मनाली और पहलगाम की घाटी और पर्वतों की ऊँचाई के लाभ एक साथ मिल जाते हैं।

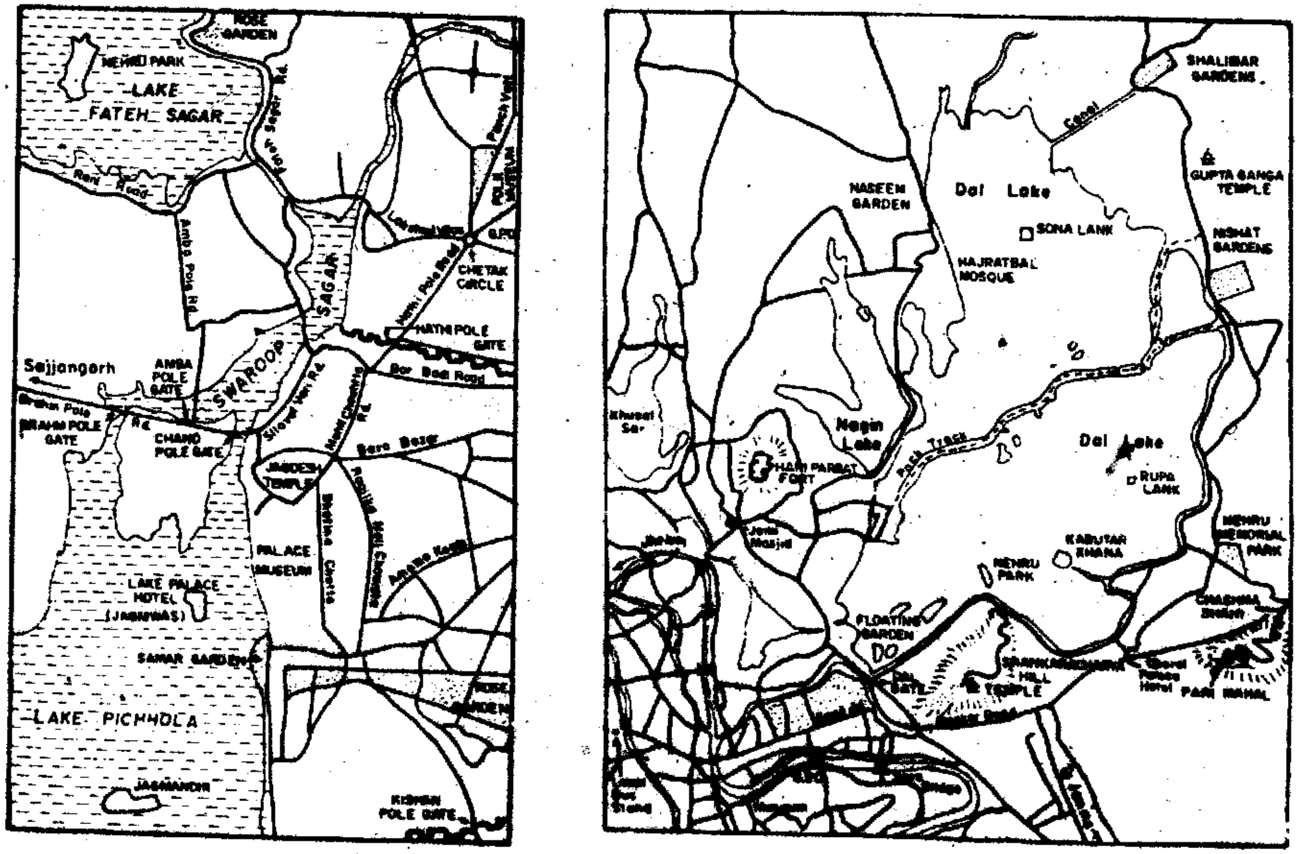

चित्र 29.4 झील के किनारे बसे पर्यटक स्थल उदयपुर और श्रीनगर

ऊँची पहाड़ी की तुलना में, ऊँची-नीची पहाड़ियों और घाटियों वाले भू-भाग का आकर्षण कुछ अधिक होता है। यह जितना अधिक कटा फटा होगा, पर्यवेक्षक के मस्तिष्क पर उतना ही अधिक नाटकीय प्रभाव पड़ेगा। झील, जलप्रपात झरने या भूमिगत जलकुंड के रूप में जल की उपस्थिति पर्यटक स्थलों के सौन्दर्य में अभिवृद्धि कर देते हैं। जबलपुर के निकट नर्मदा नदी पर बना धुआँधार जलप्रपात तथा पंचमढ़ी के पास स्थित भूमिगत जलकुंड इसी बात को प्रमाणित करते हैं। चारों ओर पहाड़ियों से घिरे जलाशयों का सौन्दर्य निराला होता है। झील या नदी के जल में झिलमिलाती वनों की परछाईयाँ गहनता का आभास देती हैं। जलक्रीड़ाओं का मनोरंजन पर्यटकों को लंबी अवधि तक व्यस्त रख सकता है। पहाड़ी पर्यटक स्थल को किसी महानगर की निकटता का अतिरिक्त लाभ मिल जाता है: क्योंकि नगरवासी अपने व्यस्त जीवन से ऊबकर समय निकालकर मनोरंजन और करने के लिए असानी से पहुँच जाते हैं। मसूरी, शिमला, महाबलेश्वर और कसौली में दिल्ली, पूणे, मुंबई और पंजाब के नगरों से लोग कुछ घंटों की यात्रा करके यहां पहुँच जाते हैं। लेकिन ग्रीष्मऋतु के व्यस्ततम महीनों में सहज पहुंच के

कारण यहां भीड़ बहुत बढ़ जाती है। इससे प्राकृतिक पर्यावरण नष्ट हो गया है और उसका स्थान कंक्रीट से बने भवनों के कृत्रिम पर्यावरण ने ले लिया है।

यदि किसी मैदानी राज्य में केवल एक ही पहाड़ी नगर हो तो उसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इसी विशिष्टता के कारण पंचमढ़ी, माउंट आबू और राँची अपने-अपने राज्यों में ग्रीष्मऋतु के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल बन गए है। उपयुक्त और महत्वपूर्ण स्थिति के लाभों के अलावा, विविध प्रकार के क्रियाकलापों के अवसर तथा चारों ओर स्थित दर्शनीय स्थानों के एक या दो दिनों के भ्रमण के अवसर पर्यटक स्थलों की उपयोगिता और अधिक बढ़ा देते हैं। शीत कालीन और ग्रीष्म कालीन लोकोत्सव के आयोजन स्थानीय हस्त कलाओं उत्पादों और दुर्लभ पौधों की प्रदर्शनियाँ तथा जनजाति के लोगों की निष्पादक कलाएँ और मेले पर्यटक स्थलों को और अधिक चित्ताकर्षक और लुभावना बना देते हैं। इन आकर्षणों की तुलना प्रसादित सौन्दर्य के आकर्षण से की जाती है, लेकिन नकली आभूषणों का भी तो अपना अलग आकर्षण होता है। त्रिपुरा के छोटे से पहाड़ी पर्यटक स्थल के प्रवेश द्वारा पर लगे एक प्रदर्शन पट्ट पर लिखा है- यदि आपने त्रिपुरा के अनन्नासों का स्वाद कभी चख लिया तो आप शिमला के सेबों के लिए कभी भी लालायित नहीं होंगे।

ये व्यापारिक युक्तियाँ हैं, जिनके बिना पर्यटन की उन्नति नहीं हो सकती। कुछ पहाड़ी पर्यटक स्थल आस-पास के दर्शनीय स्थलों पर जाने की सुविधा के लिए जाने जाते हैं। ऐसे केन्द्रों से पर्यटक पास पड़ौस में स्थित हिमाच्छादित पर्वत शिखरों, सूर्यास्त और सूर्योदय को देखने के बिन्दुओं, वन्यजीव अभयारण्यों, मन्दिरों या बौद्ध मठों, गुफाओं, चट्टानी भू-भागों, शैल चित्रों या शैलों में बनी मूर्तियों को देखने के लिए सुगमता से जा सकते हैं। आपको यह जानना अच्छा लगेगा कि किस पहाड़ी पर्यटक स्थल का आकर्षण इन्हीं कारणों से और अधिक बढ़ गया है।

(ख) पुलिन पर्यटन

गुजरात में कांधला से लेकर पश्चिम बंगाल में कलकत्ता तक भारत की 7000 कि. मी. से अधिक लंबी तट रेखा है। इसमें भारतीय द्वीपों की तटरेखा भी शामिल हैं। इन तटों पर अनेक पुलिन हैं, जिनसे पुलिन पर्यटन का संवर्धन संभव है। गोआ और केरल में कोवलम के मनोहारि पुलिन, पर्यटकों के मन को बहुत भाते हैं। कभी कभी इन पुलिनों पर स्वदेशी पर्यटकों की संख्या विदेशी पर्यटकों से बहुत अधिक हो जाती है।

कोवलम की लोकप्रियता के दो मुख्य कारण हैं एक तो यहाँ तट के पास समुद्री जल शान्त रहता है दूसरे यहाँ शार्क का कोई भय नहीं। इसके अतिरिक्त तट पर उगे नारियल के कुंज इसे और भी अधिक रमणीक बना देते हैं। जिस सीमा तक धूप स्नान की अनुमति स्पेन, इटली और दक्षिण फ्रांस के तटों पर है, उस सीमा तक तो धूप स्नान कोवलम में निषिद्ध है, फिर भी पर्यटक यहाँ पूर्ण आनंद लेते हैं। यह एक स्वास्थ्य वर्द्धक पर्यटक स्थल है। यहाँ शरीर पर आयुर्वैदिक पद्धति से मालिश करवाने की

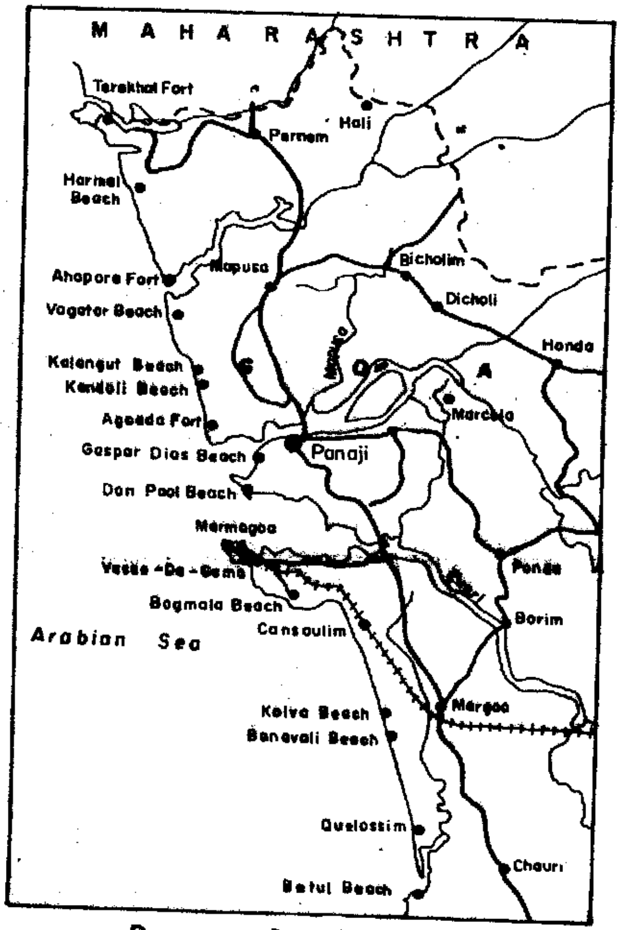

चित्र 29.5 गोआ के पुलिन

सुविधाएँ उपलब्ध हैं। तरंग क्रीड़ा और जल तरण के लिए यहाँ आदर्श परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं। गोआ के पुलिनों का आकर्षण इसलिए अधिक है कि वे काफी लंबी-चोड़े और खुले हैं। यहाँ दूर-दूर तक फैली सुनहली रेत धूप में चमचमाती रहती है। गुजरात के सौराष्ट्र तट पर मीलों लंबे पुलिन है। इसकी सुनहरी रेत भी धूप में चमकती रहती है। जूनागढ़ के भूतपूर्व नवाब ने यहां के पुलिन पर आमोद-प्रमोद के लिए एक महल बनवाया था। इस महल का उपयोग शाही परिवार के लोग और शाही बेगम ही कर सकती थीं। इसी तरह के महल चोरबाड़ और अहमदपुर मॉडवी में भी हैं।

महाराष्ट्र के तट पर छोटे-छोटे आठ पुलिन हैं। ये मुंबई के लोकप्रिय जुहू से लेकर दक्षिण में 220 कि. मी. दूर मुलड तक फैले हैं। ये छोट-छोटे अविकृत पुलिन पूरे तट के साथ-साथ विस्तृत हैं। ये प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हैं। लेकिन पर्यटन के लिए इनका विकास नहीं हो सका है। इसके धुर दक्षिण में गोआ का 105 कि. मी. लंबा समुद्रतट है। इस तट पर 40 पुलिन है, जिनमें से 12 अत्यन्त लोकप्रिय हैं। यहाँ के प्रसन्नचित्त सत्कारशील और अतिथिप्रिय लोगों के कारण पर्यटन का अत्यधिक विकास हुआ है। कर्नाटक के दक्षिणी समुद्रतट के साथ मंगलौर और मालपे के पास तथा उत्तर में कारवार के समुद्रतट

पर पुलिन हैं।

खिली धूपवाला और स्वच्छ मैरियाना पुलिन चेन्नई का गौरव है। यह संसार में दूसरे नंबर का सबसे बड़ा पुलिन है। यह उत्तर में चेन्नई पोताश्रय से लेकर दक्षिण में सेंट टामस गिरजाघर तक 12 कि. मी. की दूरी में विस्तृत है। यह पुलिन इलियट के शान्त पुलिन में जाकर मिल जाता है। जिसका विस्तार अड्यार आवासीय कालोनी तक है।

आंध्र प्रदेश में विशाखापतनम के तट के साथ रामकृष्णमिशन तथा ऋषिकौंडा नाम के दो पुलिन हैं। उड़ीसा में गोपालपुर के प्राचीन समुद्री पतन के निकट एक पुलिन है। यह पुलिन बालू के टीलों से घिरा है। पुरी और कोर्णाक में भी पुलिन हैं। बालसोर के निकट चाँदीपुर का पुलिन इसलिए प्रसिद्ध) है कि वहां भाटा प्रतिदिन 55 कि. मी. पीछे हट जाता है। पश्चिम बंगाल में गंगा के मुहाने के निकट दीघा नामक पुलिन है। यह 6 कि. मी. लंबा तथा संसार के सबसे चौड़े पुलिनों में से एक है। समुद्र की मन्द-मन्द लहरें इसे पखारती रहती हैं। इसको दो और कैसुआरिना के सघन वन हैं। यहाँ समुद्र उथला और शान्त है। विगत कुछ वर्षों में यहां पाल नौकायन, मत्स्य आखेट और विश्राम के लिए लोकप्रिया हो गया है।

- **स्थिति, स्थान और पर्यटकों के मनोरंजन के लिए उपलब्ध साधनों के आधार पर पर्यटक-स्थल अनेक प्रकार के होते हैं।**
- **पर्वतीय पर्यटक स्थल कटक और पहाड़ियों की विभिन्न ऊँचाइयों पर नदियों के किनारे या झीलों के चारों ओर बसे होते हैं।**
- **विनोद स्थल यदि किसी नगर या किन्हीं अन्य आकर्षण केन्द्रों के निकट है तो पर्यटन के लिए उसका महत्व बढ़ जाता है।**
- **भारत की लंबी समुद्रतट रेखा के साथ-साथ पुलिन पर्यटन की बहुत संभावनाएं हैं।**
- **केरल और गोआ के पुलिनों को छोड़कर अनेक अभी तक अपेक्षित पड़े हैं।**

पाठगत प्रश्न 29.2

1. निम्नलिखित प्रकार के स्थानों पर बने स्वास्थ्य वर्द्धक पर्यटक स्थलों में से एक-एक उदारण दीजिए।

(i) कटक के साथ (हिमाचल प्रदेश में) ....

(ii) मेघालय में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर स्थित चोटियाँ ....

(iii) जम्मू-कश्मीर में पर्वत घाटी में नदी के किनारे ....

(iv) उत्तर प्रदेश में झील के चारों ओर ....

2. निम्नलिखित के सही जोड़े बनाइये :-

पर्वतीय या स्वास्थ्य वर्द्धक पर्यटक स्थल	राज्य, जिसमें स्थित है
(i) मुन्नार	(क) पश्चिम बंगाल
(ii) मोरनी	(ख) गुजरात
(iii) सपुतारा	(ग) हरियाणा
(iv) माथेरान	(घ) केरल
(v) दीघा	(ङ) महाराष्ट्र

3. कोवलम पुलिन की लोकप्रियता के चार कारण बताइये।

(i).. (ii)..

(iii).. (iv)..

4. निम्नलिखित में से कौन से तीन कारक पर्वतीय पर्यटक स्थल के महत्व को बढ़ाते हैं?
विरदित दृश्य भूमि, फैशन में रूचि रखने वाले पर्यटक, किसी नगर से निकटता, पूजा-अर्चना के लिए मन्दिर, हिमरेखा से निकटता, बहुमंजिले भवन

5. महाराष्ट्र, उड़ीसा, तमिलनाडु के एक-एक महत्वपूर्ण पुलिन का नाम बताइये।

(i).. (ii).. (iii)..

(ग) सांस्कृतिक केन्द्र (विरासत पर्यटन)

भारत विरासत पर्यटन में संपन्न है। यह भारत के प्रत्येक भाग के लिए सही है। प्राचीन मन्दिर और पूजास्थल हमारी परंपरा के महत्वपूर्ण अंग हैं। विभिन्न धर्मावलम्बी इन्हें पवित्र मानते हैं। ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ कभी साधु सन्तों और ऋषि मुनियों के आश्रम थे। लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष भक्त इन तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हैं। इनकी संख्या सबसे अधिक है। अन्य पर्यटन केन्द्रों की अपेक्षा ये अधिक संख्या में हैं और देश के कोने-कोने में स्थित हैं। स्थापित मूर्तियों, प्रतीक चिन्हों, विविध वास्तुकलाओं तथा अपनी उत्पति से जुड़ी अनेक पौराणिक गाथाओं के कारण ये प्राचीन मन्दिर जिज्ञासु पर्यटक को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मन्दिरों मीनारों तथा मेहराबों की शैली में एक स्थान से दूसरे स्थान पर अन्तर आ जाता है। लद्दाख और सिक्किम के गोम्पा (बौद्ध विहार) तमिलनाडु और दक्षिण भारत के अन्य राज्यों के हिन्दू मन्दिरों के गोपुरम इसके अच्छे उदाहरण हैं। गोपुरम दक्षिण भारत के मन्दिरों विशेष कर तमिलनाडु के ऐसे सिंह द्वारा या प्रवेश द्वारा हैं, जिनपर विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियाँ उत्कीर्ण होती हैं तथा वे अनेक प्रतीक चिन्हों से सज्जित होते हैं।

हिन्दुओं ने भारत के हर प्रमुख कोने में तीर्थों की स्थापना करके दिशा-दृष्टि का परिचय दिया है। हिन्दुओं के चार पवित्रतम तीर्थ हैं, जिन्हें धाम कहा जाता है। प्राचीन काल में परिवहन और संचार के सुविधाजनक साधनों का नितान्त अभाव था, लेकिन तब भी लोग अपने जीवन में कम से कम एक बार चारों धामों की यात्रा कर पुण्य कमाना चाहते थे। उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में

द्वारका तथा पूर्व में जगन्नाथपुरी भारत के चार पवित्र धाम हैं। इनके अतिरिक्त सात पुरी हैं, जिन्हें बड़ा पवित्र माना जाता है। पूर्व में 'पुरी' दक्षिण में काँची पुरम, उत्तर में वाराणसी (काशीपुरी) अयोध्या और हरिद्वार (मायापुरी), मध्य में उज्जैन (अवन्तिका पुरी) तथा पश्चिम में द्वारका पुरी नामक सात 'पुरी' हैं। पौराणिक दृष्टि से सबसे अधिक पवित्र 12 शिव मन्दिर हैं जो भारत भर में फैले हैं। इन्हें ज्योतिर्लिंग कहा जाता है। इनकी उत्पत्ति के विषय में अनेक पौराणिक आख्यान हैं। इस तरह से 51 (इक्यावन) ऐसे पवित्र स्थान हैं, जिन्हे शक्ति पीठ' कहते हैं। इनमें भक्तगण देवी के विभिन्न रूपों की पूजा करते हैं। देवियाँ जन्म दात्री माँ की प्रतीक हैं। मथुरा-वृन्दावन भगवान कृष्ण के जीवन से जुड़ा एक और महत्वपूर्ण हिन्दूओं का तीर्थ क्षेत्र है।

धर्म के विषय में बड़ी स्वतन्त्रता रही है। इसीलिए अनेक पंथ और संप्रदाय बन गए हैं। अनेक संप्रदायों के कारण ही अनेक तीर्थ स्थानों की उत्पति हुई है। मन्दिरों का निर्माण बहुत सोच समझ कर विशिष्ट स्थानों पर किया गया है। इन्हें पर्वत शिखरों, नदी-संगमों, नदियों या झीलों के तटों पर, द्वीपों में या वन कुंजों में बनाये गये है। मन्दिरों के चारों ओर नगर बसते और फैलते गए। पौराणिक आख्यानों से सुपरिचित और प्रशिक्षित मार्ग दर्शकों की बहुत आवश्यकता है। इनमें इतना चातुर्य होना चाहिए कि ये तीर्थों के इतिहास को सुचारू और प्रभावशाली ढंग से पर्यटकों के सामने प्रस्तुत कर सकें। पर इतिहास और भूगोल के प्रभाव की विशद व्याख्या करके हम अपने देश के मन्दिरों की परंपरा में पर्यटकों की अभिरूचि जाग्रत कर सकते हैं।

इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नगर प्राचीन नगरों के खंडहर गुफाओं के अन्दर शैलों में निर्मित मन्दिर भी आकर्षण के केन्द्र हैं। बौद्ध धार्मिक स्थलों के चैत्यों (महाकक्ष), स्तूपों स्तम्भों और तोरणों के अवशेष भी दर्शनीय हैं। ऐसे भी मन्दिर हैं जो अंशतः या पूर्णतः समुद्र में डूब गए हैं या खंडहर बन गए हैं। ऐसे स्थानों पर नए मन्दिरों या समाधियों का पुनर्निर्माण किया गया है। धर्मानुयायी आज भी पूजा अर्चना और प्रार्थना के लिए इन स्थानों पर जाते हैं। बिहार और उसके आस पास के क्षेत्रों में भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं से जुड़े अनेक स्थान हैं। ये भी अन्तर्राष्ट्रीय आकर्षण के केन्द्र बन गए हैं। जैन मन्दिर, मूर्तियां और समाधियाँ, गुजरात, बिहार, राजस्थान और कर्नाटक में पाई जाती हैं। इनमें जैन मुनियों की भव्य कलात्मक मूर्तियाँ हैं। मन्दिरों की दीवारों और तोरणों पर जैन मुनियों के जीवन वृत्त उकेरे गए हैं। बिहार में हजारी बाग के निकट माउण्ट पारसनाथ पर जैन धर्मावलम्बियों का पवित्रतम स्थल है।

पंजाब, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र और हिमालय के भागों में सिक्खों के प्रसिद्ध इनमें हरिमंदिर साहिब अमृतसर में सर्व प्रमुख है। भारत को गर्व है कि केरल और गोआ जैसे राज्यों में प्राचीन गिरजाघर आज भी ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं। यहूदी और पारसी अल्पसंख्यकों के धर्मस्थान यत्र-तत्र पाए जाते हैं।

कुछ प्रसिद्ध मस्जिदें हैं जो अपनी ऊँची-ऊँची और कलात्मक मीनारों के कारण दूर से ही पहचानी जाती है। इनके विशाल चतुष्कोणीय प्रांगण में मुस्लिम समुदाय भारी संख्या में नमाज अदा करता है। दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद, हैदराबाद की मक्का मस्जिद, भोपाल की ताज मस्जिद, श्रीनगर की प्राचीन

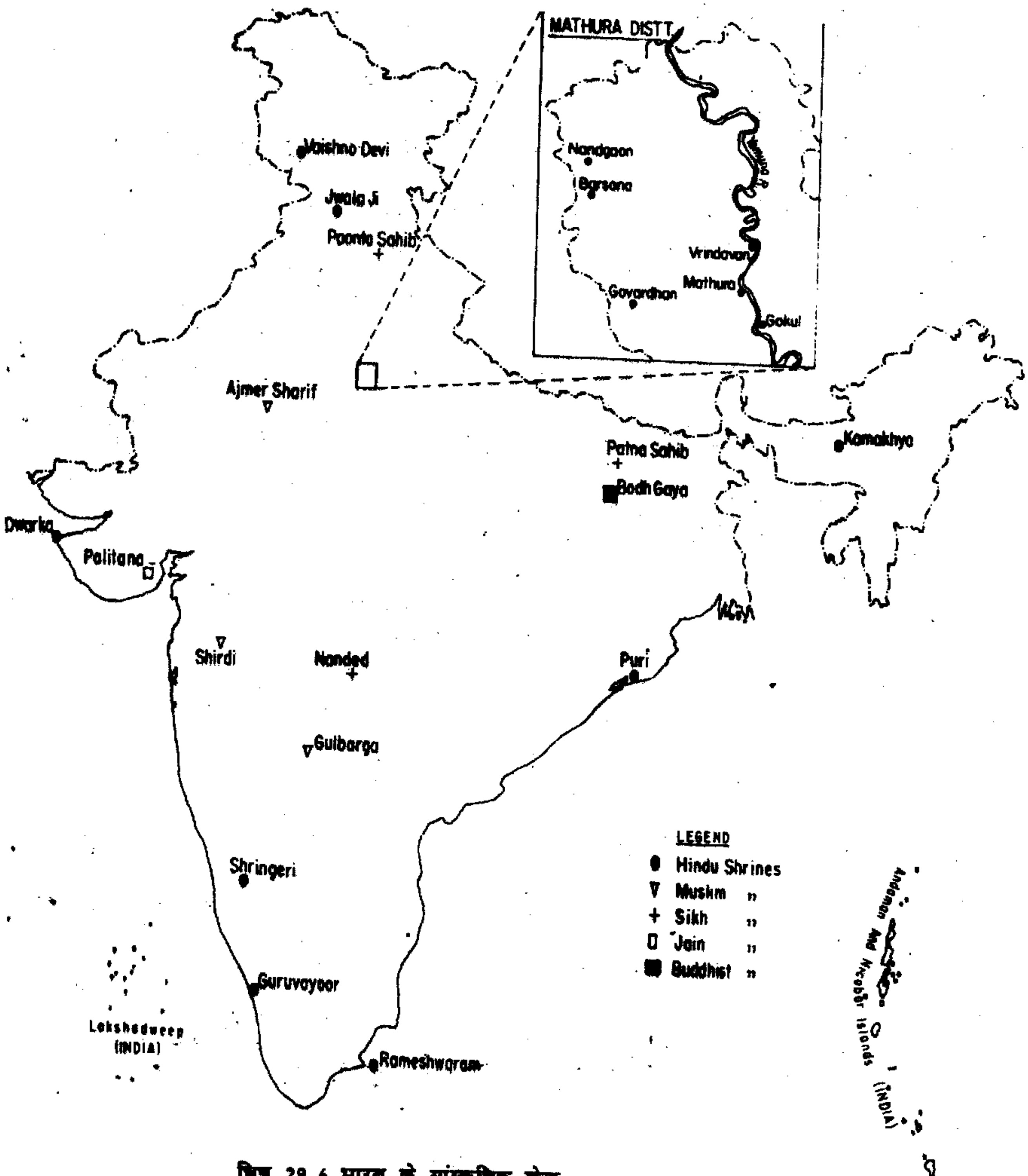

चित्र 29.6 भारत के सांस्कृतिक केन्द्र

शाहमादान तथा नवीन हजरतबल मस्जिद, अजमेर में मुइनुद्दीन चिस्ती की मजार, दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की मजार भी भव्य और दर्शनीय है। अनेक प्राचीन पूजास्थल सभी धर्मावलम्बियों के लिये पूजनीय हैं। हमारे देश में अनेक प्रचीन धर्मस्थान आज भी ऐसे हैं जहाँ बहुत कम तीर्थयात्री ओर पर्यटक जाते हैं। ऐसे धर्म स्थानों पर स्थानीय पर्यटक मार्गदर्शकों के लिए बहुत अच्छे अवसर हैं। वे पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं।

ऐसे अनेक प्राचीन नगर हैं, जो कभी भारत के छोटेबड़े राज्यों की राजधानियाँ थीं। उस समय के भग्नावशेष भारत की ऐतिहासिक धरोहर हैं। भारत में दो प्राचीन नगरों के खंडहर आज भी पर्यटकों के लिए सबसे अधिक आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं। इनमें से एक कर्नाटक में स्थित हम्पी है और दूसरा उत्तर प्रदेश में आगरा के पास स्थित फतेहपुर सीकरी है।

हम्पी के खंडहरों में दक्कन के पठार की प्राचीन शैलों का प्रदर्शन देखने को मिलता है। राजमहलों, मन्दिरों, पण्यवीथियों, तुंगभद्रा नदी के तट के निकट स्थित जलाशयों के खंडहरों में यह प्रदर्शन दिखाई पड़ता है। हम्पी दो शताब्दियों तक विजय नगर के विशाल साम्राज्य की राजधानी रही है। इस साम्राज्य का विस्तार अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तट तक था। इसमें गोआ के प्रदेश भी शामिल थे। फतेहपुर सीकरी का निर्माण महान् मुगलसम्राट अकबर ने अपनी राजधानी के लिए किया था। लेकिन जल के निरन्तरअभाव के कारण इस भव्य नगर को छोड़ना पड़ा था। अनेक स्थानों पर बने बादशाहों के प्राचीन मकबरों के दर्शनों के बिना सांस्कृतिक केन्द्रों की यात्रा अधूरी रह जाती है। शाही मुगल बेगम की स्मृति में बना स्मारक ताजमहल इन सबमें निश्चय ही सर्वोत्तम है। राजस्थान और दिल्ली के आस-पास तक फैले क्षेत्रों से लेकर नर्मदा नदी तक, दक्षिणी पठार के कुछ भागों तथा कोंकण तट तक चले गए सह्यादि पर्वतों पर अनेक प्राचीन और प्रसिद्ध दुर्ग हैं। इनमें से कुछ तो ऐसे हैं जहाँ राज महलों सहित पूरे नगर ही दुर्ग की प्राचीरों से घिरे हैं। जैसल मेरू दुर्ग-नगर का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसके चारों ओर वनस्पतिहीन निर्जन मरूभूमि है। मुंबई और पुणे से थोड़ी ही दूरी पर रायगढ़ का पर्वतीय दुर्ग है। इसे शिवाजी महाराज की राजधनी होने का गौरव प्राप्त है। इसको चौरस ऊँचे शिखर तक एक रज्जुमार्ग से पहुँच सकते हैं।

राजपूतों, मुगलों, मराठों या अपने समय के अन्य शक्तिशाली शासकों ने सुरक्षा की दृष्टि से या अपने वैभव के प्रदर्शन के लिए इन दुर्गों का निर्माण किया था। दिल्ली के निकट महरौली में कुतुबमीनार और राजस्थान में विशाल चित्तौड़गढ़ के अन्दर बनें कीर्ति विजय स्तंभ आकर्षण पर्यटकों को दूर दूर से खींच लाता है। अंग्रेज शासकों ने भी अपने चरमोत्कर्ष के दिनों में एक विशिष्ट शैली के दुर्गों का निर्माण किया था। कलकत्ता का फोर्ट विलियम तथा चेन्नई का सेंट जार्ज इसके उदाहरण हैं। कोच्चि का पुर्तगाली दुर्ग भी इसी परंपरा की एक कड़ी है। कुछ प्रसिद्ध मन्दिरों, खंडहर बने नगरों, स्मारकों और दुर्गों की स्थिति को भारत के मानचित्र में देखिए

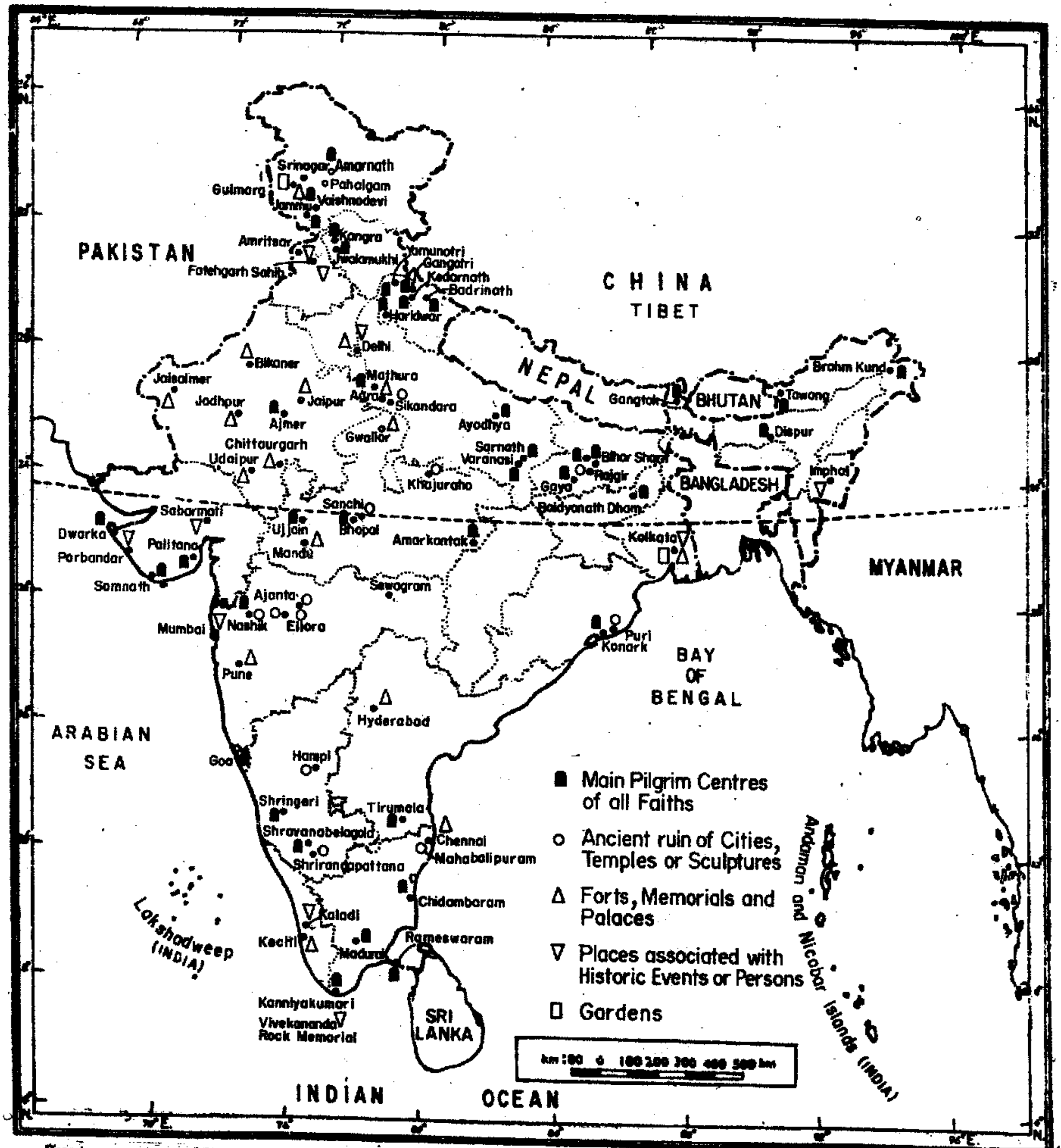

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1996.

The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

The boundary of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act, 1971 but has yet to be verified.

Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1996.

चित्र 29.7 भारत का सांस्कृतिक केन्द्र

भारत की सांस्कृतिक धरोहर में वे स्थान भी शामिल हैं, जो भारत के महान सपूतों के त्याग, तपस्या और वीरता तथा साहसपूर्ण कृत्यों की भूमि हैं। उदयपुर के निकट हल्दी घाटी, अमृतसर का जालियाँवाला बाग, पोर्टब्लेअर का सेलुलर कारावास, कन्याकुमारी में विवेकानन्द का शैल स्मारक अहमदाबाद और महाराष्ट्र के सेवाश्रम में गांधी जी के आश्रम, तथा पांडिचेरी में महर्षि अरविन्द का आश्रम कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं। केरल में अलवाए के निकट स्थित कालड़ी में आदिगुरू शंकराचार्य का जन्मस्थान भी भुलाने के योग्य नहीं हैं।

हमारे प्रमुख नगरों या ऐतिहासिक अभिरूचि के केन्द्रों में स्थापित और संचालित संग्रहालयों, चिड़ियाघरों कलावीथियों तथा स्वतंत्र भारत में बने नए नगरों का सांस्कृतिक महत्व किसी भी प्रकार कम नहीं है।

- **तीर्थ स्थान, प्राचीन दुर्ग, स्मारक और विविध प्रकार के भग्नावशेष सांस्कृतिक केन्द्र ही हैं।**
- **भारत के महान सपूतों के जीवन से जुड़े स्थान संग्रहालय, कलावीथियाँ तथा समय-समय पर आयोजित प्रदर्शनियाँ विरासत पर्यटक के अंग हैं।**

पाठगत प्रश्न 29.3

1. निम्नलिखित स्थान किन धर्मावलम्बियों से सम्बन्धित हैं:
   (i) सारनाथ (ii) अमृतसर (iii) पावापुरी (iv) सोमनाथ (v) अजमेर (vi) पुराना गोआ
   (i) (................) (ii) (..............) (iii) (..............) (iv) (..................) (v) (.................) (vi) (...............).
2. नीचे दिये गए तीसरे स्तंभ के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1 सांस्कृतिक केन्द्र का स्वरूप	2 स्मारक का स्वरूप	3 राज्य जहाँ स्थित है
i- माउण्ट पारसनाथ	जैन तीर्थांकर की प्रतिमा	---------
ii- हरमिन्दर साहब	सिखों का प्रमुख गुरुद्वारा	---------
iii- कीर्ति स्तम्भ	राजपूत राजा का विजय स्तंभ	---------
iv- माँडू	परित्यक्त दुर्ग नगर	---------
v- फोर्ट विलियम	अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग	....
vi- अवन्ती पुर	भग्नावशेष मन्दिर	....
vii- हम्पी	भग्नावशेष राजधानी नगर	....
viii- साबरमती	गांधीजी का आश्रम	....

3. भारत की चार प्रमुख दिशाओं में स्थित हिन्दुओं के चारों तीर्थ स्थानों (धामों) के नाम बताईये।
   (i)................................. (ii)................................. (iii)................................. (iv)...............................

(ब) साहसिक पर्यटन (अपारंपरिक पर्यटनस्थल)

साहसिक खेलों ने अपारंपरिक गन्तव्य स्थलों का मार्ग प्रशस्त किया है। इनसे पर्यटन के संवर्धन को नई दिशाएँ मिली हैं। पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग) हिमतरण (स्कीइंग), नदी नौकायन, जल क्रीड़ाएँ, पर्वतारोहण, शैल आरोहण, हैंग ग्लाइडिंग, पैरा ग्लाइडिंग, हाइकिंग तथा वन्य प्राणियों की आवास भूमियों में शिविर आवास, ऐसी ही क्रीड़ाएँ हैं। कुल पर्यटकों में से केवल 7% ही ऐसे हैं, जिन्हें साहसिक पर्यटक कहा जा सकता है। 25 से 45 वर्ष के आयु वर्ग के पर्यटकों को भारी संख्या में आकर्षित करने के लिए इसका संवर्धन किया जा सकता है। विदेशी पर्यटकों के लिये पूर्व निर्धारित पर्यटन कार्यक्रमों में इसे शामिल किया जा सकता है। उनके ठहरने की 28 दिनों की औसत अवधि में एक अतिरिक्त सप्ताह इसके लिए जोड़ा जा सकता है।

(i) पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग)

इस शब्द का प्रयोग कभी अफ्रीकियों के बैलगाड़ी द्वारा लंबे प्रवास के लिए किया जाता था। लेकिन आजकल इसका प्रयोग मनोरंजन के लिए की जाने वाली श्रम साध्य यात्राओं और पैदल भ्रमण के अर्थ में किया जाता है। यह एक तरह से मनोरंजन से भरपूर क्रिया-कलाप है। स्थल सेना के जवानों के द्वारा

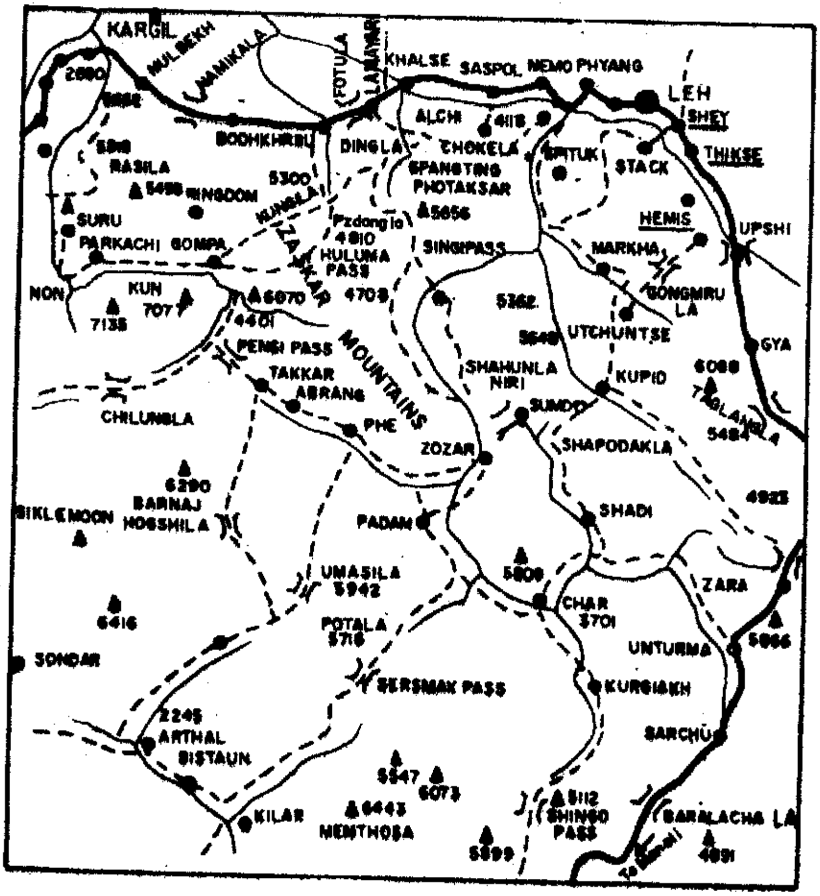

—— National Highway - - - - Trekking Route • HEMIS Monastery

चित्र 29.8 लद्दाख के ट्रेकिंग पथ

सुरक्षा की दृष्टि से किए गए लंबे भ्रमण (मार्च) से इसकी तुलना की जा सकती है। ट्रैकिंग के लिए बस्ती से बहुत दूर स्थित ऊबड़-खाबड़ भूमि को चुना जाता है। इसमें पर्यटक पहाड़ियों पर चढ़ते उतरते हैं, दर्रा को पार करते हैं, तथा ऊँचे स्थानों के परिवर्तन शील मौसम की असंख्य दशाओं को झेलते हैं। यह बहुत कम खर्चीला साहसिक पर्यटन है। इसमें तो केवल अच्छी शारीरिक शक्ति, धैर्य, तथा प्रकृति निरीक्षण क्षमता और इच्छा के अलावा किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती है। ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग) सचमुच साहस का काम है, लेकिन पूरे देश में फैली कम ऊँची पहाड़ियों में भी असानी से संपन्न होने वाले ट्रैकिंग की योजना बनाई जा सकती है।

सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, लद्दाख और आस पास के क्षेत्रों में ट्रैकिंग पथ निर्धारित किए गए हैं। कुमायूँ-गढ़वाल, हिमाचल प्रदेश हिमालय के ऊपरी भागों में छोटे और लम्बे अनेक ट्रैकिंग पथ हैं। इनमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मार्ग तथा कैलाश-मानसरोवर की तीर्थयात्रा के ट्रेकिंग पथ भी शामिल हैं।

(ii) पर्वतारोहण :

पर्वतीय दृश्य भूमियाँ तथा हिमालय के ऊँचे-ऊँचे शिखर न केवल विदेशियों को अपितु भारतीय पर्वतारोहियों को भी आकर्षित कर रहे हैं। नैन सिंह और किशन सिंह, जिनके विषय में पहले भी चर्चा की जा चुकी है, पहले भारतीय पर्वतारोही थे। ऐवरेस्ट विजेताओं में प्रमुख तेनजिंग नोर्गे पर आकर ही पर्वतारोहण की परंपरा समाप्त नहीं हो गई है। हमारे देश के अनेक स्त्री-पुरुषों और विदेशी लागों ने भी बहुत थोड़े से उपकरणों के सहारे पर्वतारोहण अभियान सफलता पूर्वक पूरे किये हैं। भारत की साहसी पर्वतारोही तथा ऊँचे पर्वतों की ट्रैकर बचेन्द्रीपाल का नाम इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। समय के बीतने के साथ-साथ एवरेस्ट का पर्वतारोहण आज कल शुद्ध रूप से व्यापार बन गया है। विभिन्न देशों के अनेक पर्वतारोही दलों ने नेपाली सरकार को लाखों रुपए देकर एवरेस्ट अभियान के पहले से आरक्षण करवा रखे हैं। इसमें शेरपा पथ प्रदर्शकों की सेवाएँ और अभियान शिविरों तक उपकरणों को पहुँचाने का शुल्क भी शामिल है। नेपाली शेरपाओं के लिए एवरेस्ट का आरोहण जीविका का एक मात्रा साधन बन गया है। अतः वे लोग एवरेस्ट शिखर के आधार शिविरों के निकट ही बस गए हैं। नेपाली सरकार के लिए यह विदेशी मुद्रा अर्जन करने का सबसे बड़ा साधन है। इसके द्वारा भारत में पर्वतारोहण के आर्थिक महत्व की पुनर्पुष्टि होती है और प्राकृतिक सौन्दर्य को संरक्षित करने का पक्ष भी सुदृढ़ होता है।

हिमाचल प्रदेश के उत्तरी आधे भाग में उच्च हिमालय के अनेक हिममंडित शिखर, हिमानियाँ और गहरी, घाटियाँ हैं। औसतन 20-20 किलोमीटर की दूरी पर लगभग 150 शिखर ऐसे हैं, जिनकी ऊँचाई 5400 मी. से अधिक है। प्राचीन काल से लेकर कुछ समय पहले तक लोगों की ऐसी धारणा थी कि पर्वत शिखरों पर चढ़ना उनको अपमानित और अपवित्र करना है। इसी कारण इनमें से अनेक को न तो कोई नाम दिया गया है और न ही उन पर कोई सफल पर्वतारोहण अभियान हुआ है। मई से लेकर अक्तूबर तक यहाँ मौसम बहुत अच्छा रहता है। शिवरों के आधार तक भारी लागत लगा कर सड़कों का जाल बिछाया गया है। इन सुविधाओं ने प्राशिक्षण और उपकरणों के मिल पाने की तकनीकी कठिनाई की कमी का पूरा कर दिया है। जम्मू कश्मीर राज्य में फैली पीरपंजाल, हिमाद्रि-जास्कर, लद्दाख, और कराकोरम पर्वत श्रेणियों में अनेक ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर हैं। इनकी ऊँचाई 5000 मी. से लेकर 7000

मी. तक है। इन पर्वत शिखरों पर खड़े होकर चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों को देखा जा सकता है।

उत्तर प्रदेश हिमालय को एक अतिरिक्त लाभ है कि वह दिल्ली के निकट है। गंगा के उद्गम स्थल गोमुख के आस-पास का क्षेत्र पूरे संसार में पर्वतारोहण के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। यहाँ अनेक हिमानियों, पर्वतीय झीलों और ऊँचे शिखरों के समूह हैं। पूर्व की ओर सिक्किम हिमालय में यहाँ के लोगों की परंपराओं की झलक देखने को मिलती है। यहाँ की पर्वतीय पगडंडियों पर पूजा अर्चना के लिए फहराये गए ध्वजों की पंक्तियां दिखाई देती हैं। बौद्ध विहारों की दीवारों पर पीतल की बेलनाकृतियाँ हैं, जिन्हें घुमाना शुभ माना जाता है। उत्तरी सिक्किम में अधिक ऊँचाई वाले पाँच क्षेत्र हैं। इनमें से 8000 मीटर से अधिक ऊँचा कॉचनजुंगा उल्लेखनीय है। तिब्बत के साथ लगने वाली सीमा की संवेदनशीलता के कारण यहाँ केवल दो पर्वत शिखरों पर चढ़ने की अनुमति है। हिमानियों की दृश्य भूमियों के सौन्दर्य का अवलोकन तथा 3700 मीटर से अधिक की उँचाईयों पर सैर करना क्या कुछ कम आकर्षक है। हिमानियों, हिमगुफओं, हिमनदीय झीलों का प्राकृतिक सौन्दर्य शब्दातीत है। इन्हीं हिमानियों का हिम ही तो पिघल पिघलकर हमारी नदियों को सदा नीरा बनाए रखता है। पर्वतारोहण के लिए लोकप्रिय शिखर, प्रमुख हिमानियाँ और कुछ झीलों को चित्र संख्या 29.3 में दिखाया गया है।

मनाली, दार्जिलिंग, और उत्तर काशी के भारतीय पर्वतारोहण संस्थान तथा दिल्ली की भारतीय पर्वतारोहण संस्था, पर्वतारोहण अभियान के कार्यक्रमों को बनाने और मार्गदर्शन करने में सहायता करती हैं। ये संस्थाएँ आकाशवाणी से मौसम के विशेष बुलेटिनों का प्रसारण करवाती हैं। ये पर्वतरोहियों के लिये आवश्यक जानकारी जुटाती है तथा आपातकालीन परिस्थितियों में भारतीय वायु सेना के साथ सहयोग करती है। ऊँचे पर्वतीय प्रदेशों का पर्यावरण बहुत ही संवदेनशील है। अतः पर्वतारोहण अभियानों की अधिक संख्या में स्वीकृतियों पर नियमन के द्वारा ही यहाँ के पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है। आने वाले दिनों में पर्वतीय पगडंडियों पर कूड़ा-करकट के फैलाव पर भी नियन्त्रण आवश्यक है। बाह्य हिमालय के गिरपदों पर और सह्याद्रि मध्य भारत की पर्वत श्रेणियों शैल आरोहण के लिए अनेक उचित स्थान उपलब्ध हैं।

(iii) शीतकालीन पर्यटक स्थल :

हिमालय के हिमाच्छादित ढालों पर हिमतरण (स्कीइंग) बहुत लोकप्रिय शीतकालीन खेल है। भारत के हिमालय क्षेत्र में वर्ष भर हिमाच्छादित भूमि उपलब्ध है। हिमतरण की उत्तेजना विदेशी पर्यटकों को आश्वस्त कर सकती है कि भारत में मन्दिरों, स्मारकों, मेलों, और रंग-रंगीले उत्सवों के अतिरिक्त देखने और करने के लिए और भी बहुत कुछ है। 2730 मी. की ऊँचाई पर स्थित गुलमर्ग केवल पर्वतीय पर्यटन स्थल ही नहीं है, अपितु यह भारत का सबसे ऊँचा हिमतरण क्षेत्र भी है। यह खेल यहाँ बहुत अच्छी तरह से विकसित हुआ है। हिमतरण का यह सबसे बड़ा तथा सर्वोतम रूप से सुसज्जित पर्यटन स्थल है। दिसंबर से लेकर अप्रैल तक यहाँ हिम की बड़ी मोटी परत जमी रहती है तथा हिमतरण के लिए यहाँ कुर्सीयान, हिमतरण लिफ्ट तथा रज्जु पथ की सुविधाएँ प्राप्त हैं। यहाँ प्रशिक्षक 10 से लेकर 21 दिनों के कोर्स चलाते हैं, जिनमें हिमतरण और पर्वतारोहण सिखाया जाता है। हिमतरण और

पर्वतारोहण के मार्ग खिलनमर्ग शहल (चरागाह) तक जाते हैं। यह स्थान गुलमर्ग से 5 कि. मी. दूर, 3045 मी. की ऊँचाई पर स्थित है और 8 कि.मी. आगे अल्पाथेर झील है। यह झील 4135 मी. ऊँचे शिखर वाली पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। हैलीकॉप्टर हिमतरण के लिए इस पहाड़ी के ढालों की जाँच-पड़ताल की गई थी। जनवरी 1998 में यहाँ हैलीकोप्टर की सहायता से हिमतरण का खेल शुरू किया गया था। इसके प्रारंभ होने से इस प्रकार के खेल को शुरू करने वाला भारत एशिया का पहला देश बन गया । हिमतरण करने वालों को हैलीकोप्टर द्वारा पहाड़ी के शिखर ले जाया जाता है। जहाँ से वे हिमतरण करते हुए नीचे आते हैं। इस प्रकार हिमतरण करने वाला पहाड़ी के शिखर पर चढ़ने के परिश्रम से बच जाता है। फ्रांस में हैली-हिमतरण पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, क्योंकि हैलीकोप्टर के शोर से पर्वतीय जीवजन्तु व्याकुल हो जाते थे। कनाडा के हिमतरण स्थल, सभ्यता के केन्द्रों से दूर हैं। अतः खराब मौसम में हिमतरण करने वालों के ऐसे स्थलों पर फंस जाने पर सहायता के मिलने में बड़ी कठिनाई होती है।

कश्मीर इस प्रकार के खेल के लिए अधिक उपयुक्त है, क्योंकि यहाँ के क्षेत्र विशाल हैं और घाटियाँ विस्तृत हैं, जिससे यहाँ कनाडा जैसी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है। हिमतरण के इस खेल से प्रतिवर्ष 2 करोड़ रूपयों से अधिक की आय होती है। हैली-हिमतरण रोक बहुत ही महँगा खेल है, अतः केवल यूरोप और उत्तरी अमेरिका के धनाढ्य पर्यटक ही इस खेल का आनन्द ले सकते हैं।

हिमाचल प्रदेश में नारकंडा हिमतरण के लिए प्रसिद्ध है। यही शंकुधारी वनों के बीच 2700 मी. ऊँचाई पर स्थित है। हिन्दुस्तान-तिब्बत, राष्ट्रीय महामार्ग यहीं से होकर गुजरता है। नारकंडा शिमला से 64 कि. मी. उत्तर में है। यहाँ के ढालों पर हाथू शिखर से लेकर कोटगढ़ में स्टोक महोदय की सेबों की भूमि तक जनवरी से अप्रैल तक, 6 से 10 मी. तक मोटी बर्फ की परत जमी रहती हैं। नारकंडा और शिमला के निकट स्थित कुफरी नामक स्थान भी हिमतरण के लिए लोकप्रिय होता जा रहा है। मनाली के निकट सोलांग नाला के आस-पास के ढाल भी हिमतरण के लिए उपयुक्त हैं। यहाँ शीतऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु की कुछ अवधि में मौसम हिमतरण के लिए अनुकूल रहता है। उत्तर प्रदेश के गढ़वाल हिमालय में बद्रीनाथ के रास्ते पर जोशी मठ के निकट 'औली' में हिमतरण पर्यटक स्थल का विकास किया गया है। यहाँ से नन्दा देवी शिखर और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों का दृश्य बहुत सुन्दर दिखता है। 2000 मी. की ऊँचाई पर स्थित जोशी मठ को 3900 मी. ऊँचे कौरी दर्रे के ढालों के शीर्ष तक एशिया की सबसे बड़ी 'तार ट्राली' से जोड़ा गया है। लेकिन यहाँ अन्य प्रकार की सुविधाओं की कमी है। कड़कड़ाती ठंड में गरम पानी का न मिलना, आवास केन्द्रों में गरमाहट और चिकित्सा की व्यवस्था का न होना तथा हिमतरण के जूते जैसे उपकरणों का निम्न कोटि का होना औली की कुछ सामयिक असुविधाएँ हैं।

गोल्फ के प्रेमियों के लिए गुलमर्ग और शिमला के निकट नलडेरा में गोल्फ के अच्छे मैदान हैं। गुलमर्ग का गोल्फ का मैदान संसार में सबसे अधिक ऊँचा है। शिमला नगर में तथा गुलमर्ग के निकट स्केटिंग के लिए बर्फ को जमाकर स्केटिंग के मैदान बनाये गये हैं। इसके बाद आने वाले वर्षों में हिम सर्फिंग को

विकसित करने के बारे में सोचा जा सकता है।

(iv) हैंग ग्लाइडिंग और पैरा-ग्लाइडिंग :

इन दो क्रीड़ाओं से चील पक्षी की भाँति अकाश की ऊँचाइयों में उड़ने का रोमांचक आनन्द मिलता है। पैरा ग्लाइडिंग के पंखों की आकृति वायुसंचरण के अनुकूल होती है तथा वे हैंग-ग्लाइडिंग के पंखों की तुलना में दस गुना हल्के होते हैं। पैराग्लाइडिंग साहस प्रिय पर्यटकों में लोक प्रिय है। इसके विपरीत हैंग ग्लाइडिंग अब केवल प्रतियोगिताओं तक ही सीमित हो गया है। इस खेल के केन्द्र हिमाचल प्रदेश की बिलासपुर, मनाली और बीर (कांगड़) घाटियों में तथा तमिलनाडु के उदगमंडलम में स्थित हैं। अच्छे प्रशिक्षकों की कमी तथा उपकरणों का अत्यधिक महँगा, इस खेल के विकास में मुख्य बाधाएँ हैं।

(iv) जलक्रीड़ा पर्यटनः

भारत में जल क्रीड़ा के लिए नदी नौकायन की बहुत संभावनाएं हैं। लेकिन अब तक यह क्रीड़ा ऋषिकेश के पास गंगा में, मनाली के निकट व्यास में तथा लद्दाख में, सिन्धु नदी के कुछ भागों में ही संभव हो पाया है। लेकिन सिक्किम में तिस्ता असम में ब्रह्मपुत्र, शालीन (हि.प्र.) में यमुना तथा अरुणाचल प्रदेश में भाराली नदियाँ भी नदी नौकायन क्रीड़ा के उपयुक्त हैं। आयातित महँगे उपकरणों के स्थान पर स्वदेश निर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रशिक्षकों और नदी पथ प्रदर्शकों की व्यवस्था, इस क्रीड़ा के संवर्धन के लिए अत्यावश्यक हैं। भारत में प्राकृतिक तथा मानव निर्मित झीलों की संख्या काफी है। इनमें पाल नौकायन, कोंटे-डोरी से मछली पकड़ने और पवन संचालन (विंड सर्फिंग) जैसी जल क्रीड़ाओं का संवर्धन किया जा सकता है। झीलों के अतिरिक्त भारत के पास एक लंबी तट रेखा है। इस तटरेखा पर एक ओर गोआ के निकट उत्ताल तरंगों का गर्जन तो दूसरी ओर इसके विपरीत हमारे द्वीप समूहों के प्रवाल तटों को शान्त समुद्री जल है। अभी तक जल क्रीड़ाओं का सबसे अच्छा विकास केवल दो झीलों में हुआ है। इनमें से एक है हिमाचल प्रदेश के पौंग बांध के पीछे बनी झील तथा दूसरी है शिलांग के उमैम। गोआ में मांडवी नदी के तट पर पणजी में पहले-पहल जल क्रीड़ा का उत्सव मनाया गया। इससे सिद्ध होता है कि गोआ के पुलिनों पर धूप सेंकने, आमोद प्रमोद करने तथा तैरने के अलावा और भी क्रिया-कलापों की संभावनाएं हैं। गोआ की तटीय पट्टी पर नदियों और नहरों का जाल सा बिछा है। इनमें जलक्रीड़ाओं के विकास की बहुत संभावनाएँ हैं। यदि अच्छे प्रशिक्षक और सस्ते उपकरण उपलब्ध हो जाएँ तो इनकी क्रीड़ाओं के लिए अधिकाधिक स्वदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

लक्षद्वीप तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूहों के प्रवालों में समुद्री जल स्वच्छ औा पारदर्शी है। उसे अत्यधिक साहसी पर्यटकों के लिए गोताखोरी को खेल का आदर्श स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। गोताखोरी में व्यक्ति नाव पर से सिर के बल समुद्र में 40-50 मीटर की गहराई तक डुबकी लगता है। इसी प्रकार की एक और जलक्रीड़ा है - स्नौर्किलिंग। यह शान्तिपूर्ण क्रीड़ा है। स्नौर्किलिग रेशा काँच से बना एक मुखौटा है, जो गोताखोर की नाक और आँखों को ढक लेता है। इसमें साँस लेने और छोड़ने के लिए नलियाँ लगी रहती हैं। कम गहराई की गोताखोरी के लिए यह यन्त्र उपयोगी है। गोताखोर इस यन्त्र के द्वारा पानी में रहकर भी साँस ले सकता है। स्कूबा भी गोता खोरी में सहायता करने वाला यन्त्र है। इस यन्त्र में ऑक्सीजन गैस का सिलेंडर होता है, जिसे कमर पर बाँध कर गोताखोर

पानी में वहाँ तक डुबकी लगा सकता है, जहाँ तक सूर्य का प्रकाश पहुँचता है। इन क्रीड़ाओं से व्यक्ति रोमांचित हो उठता है। समुद्र के जल में मछलियों के झुण्डों के मध्य भार हीनता की स्थिति में भ्रमण कितना रोमांचक होता है।

(vi) गुफा पर्यटन :

भारत में अनेक गुफाएँ और शैलों को काटकर बनाए गए अनेक मन्दिर हैं। लेकिन गुफा पर्यटन के लिए इनका विकास करने पर विचार नहीं किया गया है। औरंगाबाद के निकट लगभग 30 गुफाएँ हैं। इनमें अजंता सबसे अधिक लोकप्रिय है। चित्रकूट में भी दो गुफाएँ हैं, जिनमें नदी का जल बहता रहता है। इनके विषय में एक कहानी है कि राम और लक्ष्मण इन गुफाओं मे चट्टान पर बैठकर अपना दरबार लगया करते थे। मध्य भारत में पंचमढ़ी और भोपाल के निकट भीम बेटका के आस-पास लगभग 500 गुफाएँ हैं। ये गुफाएँ सघन वनों से ढकी ऊबड़-खाब्ड़ भूमि में फैली हैं। गुफाएँ सात विभिन्न युगों में प्रागैतिहासिक मानव को आश्रय प्रदान करती रही है। इनमें से कुछ गुफाओं में आदिमानव द्वारा निर्मित शैल चित्र भी मिले हैं। भुवनेश्वर के निकट खंड़गिरि और उदयगिरि नाम की दो पहाड़ियाँ हैं। इनकी गुफाओं में शैलों को काटकर अनेक मूर्तियाँ बनाई गई हैं। मूर्तियों में जैन मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मेघालय में चेरापूँजी के निकट गारो पहाड़ियाँ चूने के पत्थर की बनी हैं। इनमें बहुत सुन्दर गुफाएँ हैं। इन गुफाओं में सुविकसित स्टैलैक्टाइट तथा स्टैलैग्माइट हैं। इस राज्य में कुछ समय पूर्व एक 19.2 कि. मी. लंबी गुफा की खोज की गई है। यह एशिया की सबसे लंबी गुफा है। इसके अलावा जयन्तिया पहाड़ियों में 200 गुफाओं की खोज बहुत बड़ी उपलब्धि है। कुछ समय पूर्व तक तो गुफा पर्यटन का संवर्धन केवल कोरी कल्पना ही था। लेकिन अब मेघालय सरकार ने अपने राज्य की गुफाओं के विषय में एक विशेष पुस्तिका प्रकाशित की है तथा भ्रमण के पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों की व्यवस्था भी की है। इससे पूर्व वियतनाम की 16 कि.मी. लंबी गुफा तथा थाईलैंड की 14 कि. मी. लंबी गुफा एशिया की सबसे लंबी गुफाएँ गिनी जाती थीं। गुफा पर्यटन के अनेक आकर्षण हैं। इसमें उनकी स्थिति से लेकर, उनकी भूवैज्ञानिक संरचना, शैलचित्र, मूर्तिकला, पौराणिक कथाएँ और आख्यान शामिल है।

(vii) वन पर्यटन :

भारत में जितने विविध प्रकार के पेड़-पौधों और जीव जन्तु पाए जाते हैं, उसके आधे भी पूरे आफ्रीका में नहीं मिलते है। अपनी विश्वविख्यात संस्कृति विरासत की तरह भारत की जैव विरासत भी बहुत समृद्ध है।

वन पर्यटन का विकास राष्ट्रीय पार्कों, अभयारण्यों और विभिन्न प्रकार की दलदली और नम भूमियों में होता है।। इनका अध्ययन हम पहले अध्याय में कर चुके है।

वन्य जीवों में सभी प्रकार के जंगली पेड़-पौधे तथा जंगली जीव जन्तु शामिल हैं। इनमें किसी प्रकार

का मानव हस्तक्षेप नहीं होता, और वह वन्य जीवों की श्रेणी में गिने जाते हैं। पेड़ पौधे, प्रमुख स्तनपायी जीवजन्तु, तथा कीट पतंग इसके प्रमुख अंग हैं। वन्य जीवों को प्यार करने वाले पर्यटकों के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय वन क्षेत्रों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा हैं।

कश्मीर घाटी का दाचीगाम अभयारण्य हँगुल नामक कस्तूरी मृग की आश्रय स्थली है। हँगुल को कश्मीरी मृग भी कहते हैं। भारत के पहले राष्ट्रीय पार्क का नामकरण प्रसिद्ध वन्य जीव संरक्षक जिम कार्बेट के नाम पर किया गया है। यह नैनीताल की पहाड़ियों की उपत्यकाओं में फैला हैं। यह पार्क जंगली हाथियों और बाघों की आवास भूमि है। इस पार्क का विस्तार आगे नेपाल तक है। कान्हा राष्ट्रीय पार्क मध्य प्रदेश में विन्ध्याचल और सतपुड़ पहाड़ियों के बीच फैला है। इस पार्क में बाघ, तेंदुए और चीतल (हिरण) स्वच्छन्द रूप से विचरण करते हैं। राजस्थान में भरतपुर के निकट घाना पक्षी विहार है। यह पक्षी विहार उत्तरी तथा मध्य एशिया से आने वाले प्रवासी पक्षियों के लिए प्रसिद्ध हैं। अनेक जलपक्षी यहाँ के स्थायी निवासी भी है। मेल घाट महाराष्ट्र के विदर्भ प्रदेश में है। यहाँ बाघों और तेंदुओं को संरक्षण दिया गया है। एशियाई सिंहों की एकमात्र आश्रय स्थली सौराष्ट्र के 'गिर' नामक जंगल हैं। बाँदीपुर राष्ट्रीय पार्क कर्नाटक के पश्चिमी घाट क्षेत्र में फैला है। यह पार्क सोहन चिड़िया और हाथियों के लिए प्रसिद्ध है। सोहन चिड़िया एक बड़े आकार का सारस है। उड़ीसा की चिल्का झील पक्षियों समेत अनेक प्रकार के जल-जीवों के लिए प्रसिद्ध है। मध्य असम में फैला काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क एक सींग वाले गैंडे के लिए विख्यात हैं। भूटान की सीमा के निकट असम राज्य में मानस राष्ट्रीय पार्क हैं यह हाथियों, बाघों और गैंडों की आवास भूमि है। सुदूर दक्षिण में केरल का पेरियार राष्ट्रीय पार्क है। यहाँ जंगली सुअर, हाथी और हिरण स्वच्छदता से विचरण करते हैं। 800 भालूओं के संरक्षण के लिए खजुराहो या ओरछा के निकट एक पार्क विकसित करने का प्रस्ताव है। भारत में विविध प्रकार की प्राकृतिक आवास भूमियों के होने पर गर्व करना उचित ही है। सघन वनों से ढकी पहाड़ियाँ, तरंगित घास भूमियाँ, विशाल पठार, उथले जल वाली दलदली भूमियाँ, दलदली घासस्थलियाँ, खारे पानी के अनूप सभी इसकी विविधता की द्योतक हैं। संलग्न मानचित्र में इन सभी विविध आवास भूमियों की स्थिति अंकित कीजिए।

राष्ट्रीय पार्कों के नए-नए क्षेत्रों को पर्यटकों के लिए खोलना तथा पारिमित्र परिवहन का उपयोग, वन पर्यटन के संवर्धन का प्रोत्साहित करते है। पारिमित्र परिवहन के साधन वे हैं जो न तो प्रदूषण फैलाते हैं , और न ही अपने शोर शराबे से वन्य जीवों की शान्ति भंग करते हैं।

इसके साथ-साथ पैदल भ्रमणकारियों (ट्रैकरों), पद-यात्रियों और पर्वतारोहियों की भीड़-भाड़ में से भी वनों को बचाना जरूरी है। पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए बनाई गयी ठोस नीतियों का तकाजा है कि स्थानीय लोगों को वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति जागरूक बनाया जाए। तुरन्त भारी आमदनी के लालच से काम चलने वाला नहीं है। उपयुक्त पर्यावरण के संरक्षण के बिना वन्य जीवों का संरक्षण असंभव है।

पैदल भ्रमण, पर्वतारोहण, शैल-आरोहण, नदी नौकायन, जल और हिमतरण (स्कीइंग) हैंग ग्लाइडिंग, वन्य जीवों की आवास भूमियों में भ्रमण तथा गुफा पर्यटन साहस पूर्ण क्रीड़ाएँ हैं। ये सभी पर्यटकों के लिए सामान्य गन्तव्य स्थल हैं।

पाठगत प्रश्न 33.4

1. निम्न कथनों के लिये उपयुक्त सही विकल्पों को चिन्हित कीजिए
(i) पर्वतीय पर्यटक स्थल औली/नन्दा देवी में एशिया की सबसे बड़ी तार ट्राली है।
(ii) पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग) / हैलीकोप्टर हिमतरण के लिए धैर्य और शक्ति के अलावा किसी महँगे उपकरण की आवश्यकता नहीं होती।
(iii) आजकल पैरा ग्लाइडिंग/ हैंगग्लाइडिंग साहसप्रिय पर्यटकों में अधिक लोकप्रिया होता जा रहा है।
(iv) गुलमर्ग संसार के सबसे ऊँचे क्रिकेट के मैदान/ गौल्फ के मैदान के लिए विख्यात है।
(v) मेघालय ने गुफा पर्यटन/हिमतरण को विकसित करना शुरू कर दिया है।
(vi) गोताखोर सूर्य के प्रकाश के कारण/अधिक संख्या में शार्क मछलियों के कारण समुद्र में 40-50 मीटर गहरी डुबकी लगाता हैं
(vii) भालुओं के लिए पहला राष्ट्रीय पार्क ओरछा के निकट/कार्बेट पार्क के निकट विकसित करने का प्रस्ताव है।
(viii) पर्वतारोही को अधिक ऊँचाइयों पर हिमनदित/मानव निर्मित भूदृश्यों को देखने के अच्छे अवसर मिलते हैं।
2. निमनलिखित जीवों के लिए प्रसिद्ध वन्य जीव अभ्यारण्यों के नाम तथा उनकी स्थिति बताइये। एशियाई सिंह, हँगुल या कश्मीरी मृग, एक सींग वाला गैंडा, जल पाँखी, जंगली सूअर।
3. तीन भारतीय पर्वतारोहण संस्थान की स्थिति मानचित्र पर अंकित कीजिए। उनके क्या कार्य हैं ?
4. कश्मीर के गुलमर्ग में हैलीकोप्टर द्वारा हिमतरण की कौन सी विशेष सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

29.5 पर्यटन का प्रादेशिक विकास

पर्यटन तथा पर्यटक स्थलों के प्रादेशिक विकास पर विचार करने से हमें प्रत्येक प्रदेश के विशिष्ट गुणों के विषय में जानकारी मिल जाती है। आइये अब हम विभिन्न प्रदेशों की सुविधाओं का पता लगाएँ और देखें कि किस सीमा तक इन सुविधाओं से धन कमाया गया है।

जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचलप्रदेश सचमुच भारत के दो प्रमुख पर्यटक राज्य हैं। सक्रिय पर्यटन के उदाहरण देखने के लिए इन्हीं राज्यों में जाना पड़ेगा। इन राज्यों की प्राकृतिक सोन्दर्य को देखने के लिए पर्यटक निरंतर खिंचे चले आते हैं। हिमालय के अन्य सभी क्षेत्रों की तुलना में यहाँ पर्यटन का अधिक विकास हुआ है। प्रकृति की अपार संपदा के अलावा इन्हें पर्यटन के सबसे पहले शुरू होने का अतिरिक्त लाभ

भी मिला है। इन राज्यों में प्राकृतिक सौन्दर्य यंत्र तत्र सर्वत्र बिखरा है। इसी कारण ये राज्य प्रकृति की क्रीड़ा स्थली बन गए हैं। पर्यटन के योजनाबद्ध विकास के शुरू होने से पहले ही पर्यटक यहाँ के पर्वतों तथा हिम-दृश्यों के सौन्दर्य से आकर्षित होकर आते रहे हैं

(क) (i) जम्मू और कश्मीर

यह एक पहाड़ी राज्य है। यहाँ के पर्वत यूरोप के आल्प्स पर्वतों के समान दिखाई पडते हैं। लेकिन यहाँ के पर्वतों की औसत ऊँचाई स्विटरजैंड के आल्प्स पर्वतों की औसत ऊँचाई से अधिक है। इसके अलावा यह विषुवत वृत्त के अधिक निकट है। यह स्विस आल्प्स से 10° अक्षांश दक्षिण में स्थित है। इस प्रकार यह राज्य ऊँचाई और अक्षांशीय स्थिति की दृष्टि से स्विटरजरलैंड की तुलना में अच्छा है। औसत समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊँचाई पर फैली कश्मीर घाटी संभवतः अपने प्रकार की सबसे चौड़ी घाटी है। ऊंची पर्वत श्रेणियों से घिरी, इतनी ऊँचाई पर स्थित यह खुली खुली और चौड़ी घाटी के लिए सर्वश्रेष्ठ बन गई है। यहाँ के पर्वतीय ढालों को हिमानियों ने तराश कर नया रूप प्रदान किया है। यहाँ हिमानियों से बनी झीलें हैं, सिन्धु, झेलम और चिनाब जैसी महान नदियाँ हैं। यही नहीं अनेक शक्ति शली और मनोरम झरने भी हैं। यहाँ के लोग बौद्ध, हिन्दू और इस्लाम धर्मों के अनुयायी हैं। इन धर्मो ने प्राकृतिक सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिये हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से यह लघु भारत बन गया है। काल के प्रवाह में मानव प्रयत्नों ने इसे कलात्मक ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। यहाँ के सीढ़ीदार उद्यान सौन्दर्य के प्रतीक बन गए हैं। यहाँ के कुशल कारीगरों के हाथों से बनी हस्त कला की विभिन्न वस्तुएँ दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर देती हैं। जल और थल, दोनों पर ही होटल बनाए गए हैं। शीतकालीन खेलों और जल क्रीड़ाओं को आयोजन यहाँ की परंपरा बन गई है। ऊँचे स्थलों पर पैदल भ्रमण करने वालों तथा पर्वतारोहियों के लिए कैम्पों के उपयुक्त स्थलों पर तंबुओं और लकड़ी निर्मित कुटियों की व्यवस्था की जाती है। स्वदेशी और विदेशी पर्यटक विमानों, बसों, कारों आदि से बड़ी आसानी से इस प्रदेश में पहुँच सकते हैं। पर्यटन के व्यस्ततम समय में यहाँ प्रतिवर्ष औसतन 6 लाख पर्यटक आते हैं। पर्यटकों से राज्य को 300 करोड़ रूपयों की आमदनी होती है। लेकिन पर्यटकों को पूरी सुविधाएँ अभी भी उपलब्ध नहीं है। बिजली की कमी है। शीत ऋतु में बिजली की परेशानी और भी बढ़ जाती है। विमान सेवाओं का यह हाल है कि महीनों तक आरक्षण की पुष्टि नहीं होती।

पर्यटन वाहनों की भी कमी है। पर्यटन के केन्द्र तो इस विस्तृत घाटी में दूर-दूर तक फैले हैं। लेकिन पर्यटकों को इन सभी केन्द्रों पर घुमाने के लिए बहुत कम पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम बनाए गए हैं। फलस्वरूप पर्यटक सभी केन्द्रों पर नहीं पहुँच पाते। शीत कालीन क्रीड़ाएँ तो विलासिता की श्रेणी में आती हैं। पर्यटक इन पर दिल खोलकर खर्च करते हैं। लेकिन उनके द्वारा किये गए व्यय के अनुरूप उन्हें परिवहन और आवास की उच्चस्तरीय सुविधाएँ नहीं मिल पातीं। सुविधाओं की मांग जब आपूर्ति से बढ़ जाती है। तो पर्यटक ट्रैवल एजेन्टों को अनुचित अतिरिक्त धन राशि देने के लिए विविश हो जाते हैं या फिर उन्हें लंबी-लंबी कतारों में खड़े रहना पड़ता है।

विभिन्न आय वर्ग को पर्यटकों के लिए उपयुक्त सभी तरह के होटलों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। इस प्रदेश में एक समय में दस लाख पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था है। 6128 बिस्तरों की क्षमता वाले

94 पंजीकृत होटल हैं। 2150 बिस्तरों वाले 106 अतिथि गृह हैं। इनके अतिरिक्त 800 से अधिक हाऊस बोट हैं, जिनमें 4150 बिस्तरों का प्रबंध है। 370 बिस्तरे, पर्यटक गृहों तथा पर्यटक बंगलों में उपलब्ध हैं। अकेले श्रीनगर में ही अधिकतर निजी तौर पर चलाए जाने वाले होटलों में 30,000 बिस्तरों की व्यवस्था है। लेकिन विगत आठ वर्षो में आतंकवादियों और उग्रवादियों की उपद्रवकारी गतिविधियों के कारण इस अति संवेदनशील पर्यटन उद्योग को बड़ा भारी धक्का लगा है इन वर्षों में पर्यटकों के लिए जुटाई गई सभी सुविधाएँ बेकार पड़ी रही हैं।

लेकिन कश्मीर घाटी के तीन प्रमुख स्थानों श्रीनगर, पहलगॉम और गुलमर्ग में भीड़-भाड़ की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। इन स्थानों पर आने वाले यात्रियों को अन्य मनमोहक पर्यटक स्थलों की ओर भेजने में सरकार असफल रही है। विगत आठ वर्षो के दुःखद अन्तराल के बाद पर्यटन को पुनर्जीवित करने से पहले ऐसी योजनाओं पर कार्य शुरू करना जरूरी है, जिससे कि पर्यटकों के प्रवाह को नियन्त्रित किया जा सके और प्राकृतिक सौन्दर्य को संरक्षित किया जा सके। कश्मीर घाटी के केन्द्र में स्थित डल झील निरंतर सिकुड़ती जा रही है। यदि झील कें गाद-मिट्टी इसी गति से भरती रही और आस-पास के क्षेत्रों के वन इसी तरह कटते रहे तो वह दिन दूर नहीं, जब यह झील सौन्दर्यस्थली के स्थान पर आँख की किरकिरी बन कर रह जाएगी। झील की तटीय भूमि पर होटल के परिसरों के अतिक्रमण को तुरन्त रोका जाना चाहिए। साथ ही साथ झील के स्वच्छ जल को मल-मूत्र से प्रदूषित करने वाली कुछ हाऊस बोटों को निकटवर्ती नागिन और आँचर झीलों में भेजना भी जरूरी है। इससे प्रदूषण कुछ घट जाएगा। यदि सुझाए गए इन दो उपायों पर एक साथ काम नहीं किया गया तो डल झील की सफाई का काम आगे नहीं बढ़ सकेगा, क्योंकि अनियन्त्रित वैध या अवैध कटाई, उतावली में सड़कों, राजमार्गों, रज्जु मार्गों और हिमतरण की लिफ्टों के निर्माण ने पारिस्थितक संतुलन को बिगाड़ दिया है। अपनी प्राकृतिक सुषमा से अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए 21 नए गन्तव्य स्थानों को विकसित करने पर विचार कर रही है।

श्रीनगर में हजरतबल मुसलमानों का पवित्र स्थान है। इसी प्रकार बौद्धों के लिए लेह पवित्र है। कश्मीर स्थित अमरनाथ गुफा तथा जम्मू की वैष्णोदेवी हिन्दुओं के लोकप्रिय तीर्थ स्थान हैं।

सुविचारित नीति, कार्य योजना तथा इनके शीघ्र क्रियान्वयन निश्चय ही इस प्रदेश में पर्यटन के स्वस्थ विकास में सहायक सिद्ध होंगें।

(ii) हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश एक पर्वतीय राज्य है। यहाँ पर मनोरंजनप्रिय पर्यटकों के लिए विनोदस्थल हैं। यहाँ के छः नगर मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध हैं। मन्दिरों के दर्शनों के लिए प्रदेश से बाहर के तीर्थ यात्री भी काफी संख्या में आते हैं। सामान्य पर्यटकों की रूचि के लगभग सभी पर्वतीय नगर वाह्य हिमालय की मध्यम स्तर की ऊँचाईयों पर स्थित हैं। ये स्वास्थ्यवर्धक केन्द्रों या वनों के बीच स्थित विनोद स्थलों के रूप में लोकप्रिय हैं। इनमें से केवल कुछ ही स्थान ऐसे हैं जो शीत कालीन खेलों या जल-पर्यटन के लिये प्रसिद्ध हैं। विगत तीन-चार दशकों में राज्य के प्राकृतिक सौन्दर्य के आधार पर मध्यम स्तर के पर्यटन का

विकास संभव हो पाया है। निकटवर्ती राज्य कश्मीर उग्रवाद और आतंकवाद से ग्रस्त होने के कारणविगत कुछ वर्षों में यहाँ पर्यटकों और अन्य यात्रियों की भीड़ बहुत बढ़ गई है। कश्मीर के अनेक बड़े-बड़े पर्यटन केन्द्रों की तुलना में यहाँ के छोटे-छोटे पर्यटक स्थलों में पर्यटन की सुविधाएँ कम ही हैं। लेकिन पर्यटन के विकास में इस राज्य को दिल्ली जैसे महानगर और समृद्ध पंजाब की निकटता का अतिरिक्त लाभ मिला है। इस राज्य के निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग अपनी सप्ताहन्त की छुट्टियाँ मनाने के लिए ग्रीष्म ऋतु में यहाँ के ठंडे मौसम को पसन्द करते हैं। शीत ऋतु में होने वाले हिमपात को देखने और हिमक्रीड़ाओं का आनन्द लेने के लिये तो यह आदर्श स्थान बन गया है।

यहाँ के प्रमुख पर्वतीय नगरों में निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र में विभिन्न स्तर के अनेक नए होटलों का निर्माण हुआ है। राज्य के शेष अन्य पर्यटन केन्द्रों में आवासीय सुविधा केवल राजकीय बंगलों में ही उपलब्ध हैं। धनाढ्य पर्यटक तीर्थ-यात्रियों की सुविधा के लिए काँगड़ा में मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध नगरों में लोगों ने अच्छे-अच्छे होटल बनाए हैं। अधिसंख्य पर्यटक आज भी शिमला, मनाली तथा डलहौजी और उसके इर्दगिर्द ही घूमते रहते हैं; क्योंकि इन नगरों में मैदानों से पहुँचना बहुत आसान है। अपनी ऊँचाई के कारण ये नगर आदर्श पर्वतीय पर्यटक स्थल बन गए हैं। आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ इन नगरों में पर्यटकों के मनोरंजन के लिए विविध प्रकार के कार्यक्रमें का आयोजन होता रहता है। इनके कारण पर्यटक यहाँ लंबी अवधि तक ठहरना पसन्द करते हैं। पर्यटकों की भीड़ को देखते हुए अनेक होटल परिसरों का निर्माण हुआ है। लेकिन इससे शिमला के प्रसिद्ध कटक का सर्वनाश हो गया है। इसके वन प्रायः काट दिये गए हैं तथा सर्वत्र कूड़ा-करकट फैला रहता है। राज्य की राजधानी के निवासियों तथा आने जाने वाले पर्यटाकों के लिए पानी की बड़ी किल्लत हो गई है। व्यास नदी के तट पर बसा मनाली एक अत्यन्त सुन्दर पर्यटन स्थल है। लेकिन यहाँ के 14000 बिस्तरों की क्षमता वाले 500 होटलों के निर्माण से मनाली का वन्य आकर्षण समाप्त होता जा रहा है। यदि पर्यटकों को आकर्षित करने वाली पर्याप्त सुविधाओं से युक्त छोटे-छोटे अनेक पर्यटन स्थलों का विकास न किया गया तो स्वस्थ पर्यटन के विकास को धक्का लगने की आशंका है। लेकिन अभी तक इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है। ऐसे संभावित पर्यटक स्थलों को तो अभी तक मुख्य पर्यटन केन्द्रों तक जाने वाले राजमार्गों पर सुखद और मनोहर पड़ावों के रूप में ही देखा जाता है। ये स्थान अभी तक शायद इसलिए अविकसित हैं कि या तो पर्यटकों को इनके विषय में जानकारी नहीं है या वे इनकी महत्ता का मूल्यांकन यहाँ आनेवाले पर्यटकों को भीड़-भाड़ से करते हैं। अनुकूल स्थानों पर विकसित ये छोटे-छोटे पर्यटकस्थल भविष्य में कम व्यय करने वाले पर्यटकों के लिये उपयुक्त सिद्ध होंगे। आशा के अनुरूप राज्य सरकार मध्यम ऊँचाई पर तीन नए पर्वतीय नगरों मण्डी, ऊपरी शिमला तथा सिरमौर के क्षेत्रों में पर्यटक स्थलों के रूप में विकसित करने की योजना बना रही है।

कश्मीर के विपरीत यहाँ विदेशी पर्यटकों की संख्या नगण्य है। कुछ विदेशी पर्यटक लंबी दूरी के पैदल भ्रमण करने वालों तथा पर्वतरोहियों के रूप में दिखाई पड़ जाते हैं। कुछ विदेशी पर्यटक ऊपरी धर्मशाला के मैक्लियोड गंज की तिब्बती कालोनी में स्थित दलाई लामा के मुख्यालय में आते-जाते हैं। सन 1996-97 में कुल 36.56 लाख पर्यटक पर्यटन के लिए निकले थे। इनमें से केवल 1.5 प्रतिशत पर्यटक ही विदेशी थे।

इस प्रदेश में अच्छी सड़कों का जाल बिछा है। यहाँ दो छोटी रेल लाइने हैं तथा विमान सेवाएँ भी उपलब्ध हैं। इस प्रदेश में अनेक सुनिश्चित पर्यटक परिपथ हैं। इन पर पर्यटकों को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आरामदायक बसों में घुमाया जाता है। यह वास्तव में एक पहाड़ी प्रदेश है। इसकी घाटियाँ छोटी या मध्यम आकार की हैं। इसीलिये प्रत्येक परिपथ पर सीमित समय में अलग से जाना पड़ता है। पर्यटक अपनी व्यक्तिगत पसन्द के अनुसार एक विशेष क्षेत्र को पर्यटन के लिए चुन लेता है। अन्यथा पूरा प्रदेश घूमने में उसे बहुत समय लग जाएगा। राज्य के पूर्वी, मध्य और पश्चिमी क्षेत्रों में पर्यटन के पाँच परिपथ निर्धारित किये गए हैं। इस राज्य में एक लंबा मार्ग भी है, जो दक्षिण से उत्तर तक हिमालय के आर-पार जाता है। अभी तक सोलन के निकट एक बिजली चालित रज्जू मार्ग है। अब दो नये ऐसे रज्जू मार्ग धर्मशाला और कुल्लू में बनाने की योजना है। इससे स्थानीय दृश्यावलोकन का आकर्षण बढ़ेगा।

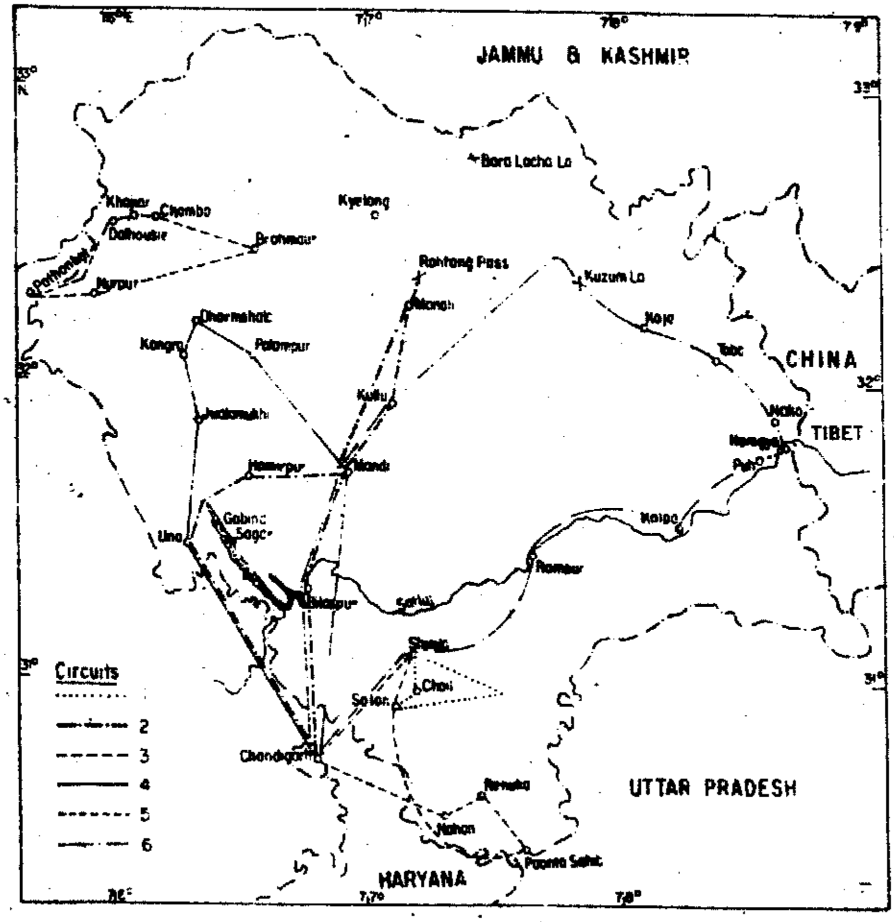

चित्र. 29.9 हिमाचल प्रदेश के पर्यटन परिपथ

पहले पाँच पर्यटक परिपथ राज्य के दक्षिणी आधे भाग से होकर ही गुजरते हैं। राज्य के आधे उत्तरी भाग में किन्नौर तथा लाहुल और स्पिति हैं। हिमाचल प्रदेश के आंतरिक भाग में फैलें ये क्षेत्र किसी भी प्रकार के लोकप्रिय पर्यटन के विकास से अभी तक बिल्कुल अछूते हैं। इस क्षेत्र का पर्यावरण बड़ा ही कठोर है। यहाँ या तो हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ हैं या फिर वनस्पतिहीन चट्टानों का अधिक ऊँचाई पर फैला ठंडा मरूस्थल है। लेकिन मानसून के वृष्टिछाया प्रदेश में स्थित होने के कारण यह ग्रीष्म ऋतु के वर्षा वाले महीने भी पर्यटन के लिये उपयुक्त हैं। यहाँ बौद्ध संस्कृति का प्रसार है। अतः यहाँ गौम्पा नाम से पुकारे जाने वाले अनेक बौद्ध मठ है। इनमें कुछ बहुत प्राचीन हैं। उदाहरण के लिये स्पिती घाटी में स्थित ताबो मठ का निर्माण एक हजार साल पहले हुआ था। इनके शैल चित्रों और मूर्तियों ने हिमाचल प्रदेश के पर्यटन के इतिहास में एक नया अध्याय लिखा है। यह क्षेत्र दूर है और दुगर्म है। लेकिन चंडीगढ़ से केवल 400 कि.मी. दूर है, क्योंकि यहाँ पर्यटकों के लिए अच्छी आवास तथा अन्य सुविधाएँ नहीं हैं अतः यह केवल साहसप्रिय पर्यटकों को ही आकर्षित कर पाता है। राज्य सरकार इस क्षेत्र की जनजाति के लोगों को पर्यटन के विकास के लिए प्रोत्साहित कर रही है कि वे पर्यटकों को समुचित सुविधाएँ देने के लिए अपने बड़े-बड़े मकानों के कुछ भाग का पुननिर्माण करके नये रूप में सजा लें। इस प्रयोग के लिए किन्नौर जिले में हिन्दुस्तान-तिब्बत राष्ट्रीय महामार्ग पर स्थित तीन केन्द्रीय स्थानों को स्वीकृति देकर एक अच्छी पहल की गई है। यदि पर्यटन के पूर्व निर्धारित (पैकेज) कार्यक्रमों को अन्तर्राज्यीय आधर पर फिर से बनाया जाये तो इस प्रदेश में पर्यटन के और अधिक विकास के लिए अनेक उपयुक्त विकल्प सामने आ जाएंगें। जैसे चम्बा और काँगड़ा के प्राचीन मन्दिरों की यात्रा को जम्मू-कश्मीर राज्य के जम्मू क्षेत्र में स्थित वैष्णो देवी के मन्दिर की यात्रा से जोड़ा जा सकता है। इसी प्रकार यदि हिमाचल के लाहुल स्पिती प्रदेश की साहसपूर्ण यात्रा की जम्मू कश्मीर राज्य के निकटवर्ती लद्दाख और जास्कर क्षत्रों की यात्रा से जोड़ा जा सकता तो और अधिक आय हो सकती है। ये दोनों क्षेत्र एक मौसमी सड़क मार्ग से जुड़े हैं। हिमाचल के पूर्वी भाग का उ.प्र. के पश्चिमी भाग को मिला कर एक नया पर्यटन परिपथ बनाया जा सकता है। यह पर्यटन परिपथ उ. प्र. के देहरादून, मंसूरी तथा गढ़वाल क्षेत्रों के केन्द्रों से होकर गुजर सकता है।

पीर पंजाल और धौलाधर पर्वतश्रेणियाँ हिमाचल प्रदेश में पश्चिम से पूर्व तक फैली है। इन श्रेणियों के आरपार जाने वाले पैदलभ्रमण (ट्रैकिंग) के पुराने टूटे फूटे मार्ग को फिर से ठीक करके चालू किया जा सकता है।

(iii) सुदूर दक्षिण : सुदूर दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर कोच्चि तथा और अधिक उत्तर में गोआ तक का समुद्रतट पर्यटकों को सबसे अधिक आकर्षित करेता है। इस तट पर फैली पुलिनों की श्रृंखला को पर्यटक मन की शांति और विश्रांति तथा जल क्रीड़ाओं के लिए बहुत पसन्द करते हैं। कोल्लम (क्विलोन) से अलिप्पुल सद (अलप्पी) होकर कोच्चि तक 84 कि. मी. लंबा जलमार्ग एक अनूप से होकर गुजरता है। इसके शान्त जल में झाँकते नारियल के झुरमुट बड़े सुहावने लगते हैं। नौका विहार के लिए यह जलमार्ग अति लोकप्रिय है। वेम्बनाड भारत का सबसे लंबा अनूप है। इसके दक्षिण सिरे पर स्थित अलिप्पुल नगर नहरों और अनुपों से जुड़ा है। इसी कारण इसे पूर्व का वेनिस कहा जाता है।

पर्यटन केन्द्र के रूप में इसका बहुत महत्व है। यह एक व्यायापरिक मंडी भी है। यह केरल की प्रसिद्ध सर्प-नौका दौड़ का प्रस्थान बिन्दु है। प्रकृति ने केरल को वनाच्छादित पलनी और नीलगिरि पहाड़ी श्रृंखलाएँ उपहार में दी हैं। यहाँ अनेक पर्वतीय पर्यटक स्थल, और वन्य जीवन अभ्यारण्य हैं। इसके पहाड़ी ढालों पर चाय काफी, मसालों आदि के बागान हैं। कर्नाटक के मैसूर और बंगलौर नगरों और इनके आसपास में प्राचीन राजमहल, उद्यान, जलप्रपात और ऐतिहासिक स्थान हैं। इस प्रदेश के लोग प्राचीन काल से ही समुद्रगामी रहे हैं तथा विदेशी यात्रियों का स्वागत सत्कार करते रहे हैं। यह बात तब की है, जब आधुनिक पर्यटन जैसा कुछ था ही नहीं। सागर, मृदुल जलवायु, पर्वत श्रृंखलाओं और वनों के मनोरम दृश्यों ने मिलकर इसे बहुकार्यात्मक पर्यटक प्रदेश बना दिया है।भारत का यह दक्षिणी भाग बड़ा गौरवशाली है। यहाँ के अधिकतर लोग शिक्षित हैं। ये पर्यटकों को अपेक्षाकृत स्वच्छ और सस्ते आवास उपलब्ध कराते हैं तथा अन्य प्रदेशों से जुड़े हुए निर्धारित पर्यटन के पूर्व कार्यक्रमों की व्यवस्था करते हैं। उन्होंने अपनी आतिथ्य भावना तथा परंपरागत और आधुनिक रहन सहन के रूप का सुन्दर उपयोग किया है। संपूर्ण भूमि पर फैले प्राचीन मन्दिरों के गोपुरम जिज्ञासु विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं क्योंकि वे मन्दिरों के आन्तरिक भाग की झलक देखना चाहते है और थोड़ा उत्तर के कारवाड, शिमोगा और गुलबर्गा में पर्यटन का विकास उपेक्षित रहा है। ये कर्नाटक के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है। ये क्षेत्र मैसूर और बंगलोर के सामने छोटे और उपेक्षित ही बने रहे।

ख. भारत के उत्तरी तथा दक्षिणी छोर के केवल दो प्रदेश ही पर्यटन की दृष्टि से सुविकसित हैं। शेष भारत में पर्यटन के सुविकसित केन्द्र थोड़े से ही हैं जो यत्रतत्र बिखरें हैं। पश्चिमी घाट के आर-पार मुबई से लेकर पुणे तक, महाराष्ट्र के अजन्ता एलोरा (वेरूल) के गुफा मन्दिर, मध्यप्रदेश में खजुराहों के मन्दिर, दिल्ली-आगरा-जयपुर का त्रिकोण, राजस्थान में उदयपुर, उड़ीसा में पुरी-कोणार्क, आँध्रप्रदेश में हैदराबाद और निकवर्ती क्षेत्र, बिहार में बौद्ध गया, राजगिर तथा पश्चिम बंगाल में कलकत्ता ओर उसका पड़ोस ऐसे क्षेत्र हैं, जहां पर्यटकों का आना जाना अधिक रहता है। देश के विशाल आकार और असंख्य आकर्षणों की तुलना में ये क्षेत्र बहुत ही छोटे हैं। यह सही है कि उत्तर भारत के मैदानों में तथा नर्मदा और गोदावरी नदियों के साथ-साथ, तीर्थ यात्रा और पूजा के पवित्र स्थानों को जाने वाले अनेक पथ हैं। लेकिन हम इन्हें पर्यटन केन्द्रों की सूची से इसलिए बाहर कर रहे हैं, क्योंकि यहाँ तो पर्यटन के विकास के बिना भी, भक्ति भाव से प्रेरित और अभिभूत तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ अतीत काल से ही रही है।

वाराणसी और हरिद्वार में गंगा के घाट, बिहार के बौद्ध मन्दिर, आगरे का किला और ताजमहल, राजस्थान के भव्य राजमहल और अतिविशाल दुर्गों को अभी तक पर्यटन के सुविकसिति केन्द्रों की श्रेणी में रखा जाता है। असंख्य पर्यटक इन्हें देखने के लिए प्रतिवर्ष आते हैं। लेकिन नई प्रवृत्ति यह देखने में आई है कुछ दिनों से ऐसा लगने लगा है कि यहाँ पर्यटन अपने विकास की चरम सीमा को छू चुका है। ऐसा शायद इसलिए है कि यहाँ के आकर्षणों में इतनी विविधता नहीं है, जो पर्यटकों की अधिक समय तक बाँधे रखे। यहाँ पर्यटन का विकास अवरूद्ध सा हो गया है। पर्यटन की इस दशा में पर्यटकों की संख्या में घट-बढ़ के बावजूद एक औसत संख्या बनी ही रहती है। विगत कुछ वर्षों में शान्त, सत्कारशील और अतिथिप्रिय दक्षिण की ओर पर्यटक अधिक आकर्षित हो रहे हैं।

ऐसा नही है कि इन क्षेत्रों में प्राकृतिक अथवा सांस्कृतिक आकर्षण की कमी है। वास्तव में पर्यटन नियोजकों ने जहां कुछेक क्षेत्रों का अधिक महत्व दिया है वहां बहुत से अन्य क्षेत्रों की उपेक्षा की है। कोकणतट तथा इसकी पृष्ठभूमि में स्थित सह्याद्रि प्राकृतिक सौंदर्य और संसाधनों से भरपूर हैं। यहाँ पर्यटन को तेजी से विकसित किया जा सकता है। महाराष्ट्र का यह भूमि भाग हरित पहाड़ियों और समुद्र के नीले जल के बीच विस्तृत है। यहाँ पुराने किले, मन्दिर, पूजा स्थल, राजमहल और अछूते पुलिन हैं, जो किसी भी दृष्टि से गोआ के पुलिनों से कम आकर्षक नहीं हैं। लेकिन अकेले इन बातों के बलबूते पर तो यहाँ पर्यटन का विकास नहीं हो सकता। रायगढ़, सिन्धुदुर्ग और रत्नगिरि जिले भारत के सबसे पिछड़े क्षेत्रों में गिने जाते हैं। पिछड़ेपन का कारण यहाँ के लोगों का रोजगार की तलाश में पलायन करके

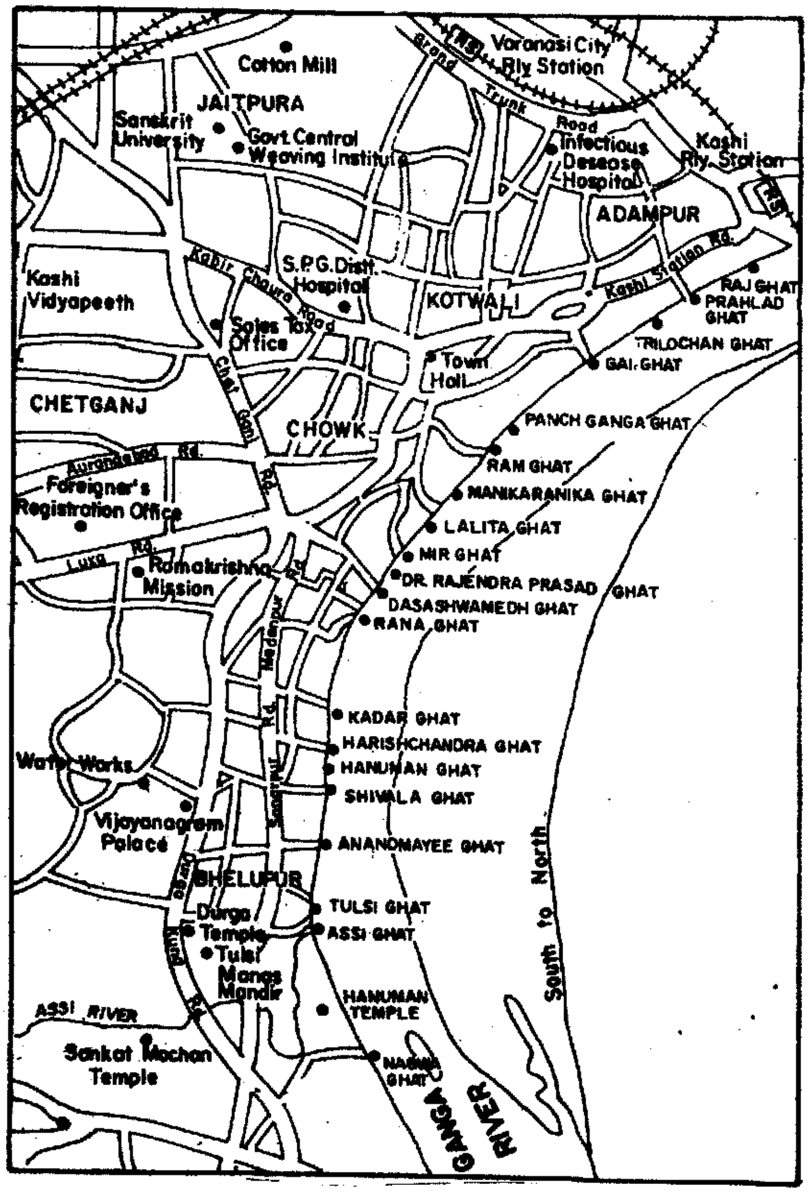

29.10 बनारस में गंगा के घाट

महानगर मुंबई में जाकर बस जाने को माना जा रहा है। भारी संख्या में मुलसलमान् अपने घर छोड़कर रोजगार के लिये खाड़ी के देशों में चले गए हैं। दूसरे लोग अभी तक अपनी जमीन से जुड़े है। यह प्रवृत्ति यहाँ के लोगों को किस तरह आश्वस्त कर सकती है कि उनके क्षेत्र में पर्यटन के विकास की बहुत संभावनाएँ हैं तथा इनका सक्रिय पर्यटन के विकास के लिए उपयोग किया जा सकता है। मुंबई के निकट होते हुए भी इस क्षेत्र तक पहुँचने में अपनी तरह की कठिनाईयाँ हैं। यहाँ की सड़कें कच्ची हैं और बिजली की आपूर्ति नियमित नहीं है। डमोल जैसे छोटे बन्दरगाह भी हैं, लेकिन बालू से अवरूद्ध होने के कारण नावें और स्टीमर चलाना मुश्किल है। लेकिन कोंकण रेलमार्ग के चालू हो जाने से परिवहन की स्थिति में काफी हद तक परिवर्तन आया है। कोंकण तट, गुजरात तट तथा आँध्र प्रदेश तट के पुलिन पर्यटकों के लिए विकसित होने की प्रतीक्षा में है। अन्तराष्ट्रीय पर्यटन की दृष्टि से विकसित होने पर ही वास्तविक आमदनी हो सकेगी।

गुजरात का गिर वन एशियाई सिंह का अन्तिम एकमात्र निवास है। नैनीताल के समीप कार्बेट पार्क तथा भारत के मध्य में फैले कान्हा राष्ट्रीय पार्क की तरह यह भी अन्तर्राष्ट्रीय साहसी पर्यटकों की गन्तव्य स्थली है। जंगली गधों की प्राकृतिक आवास भूमि कच्छ के रण का बहुत कम प्रचार हुआ है।

'पहियों पर राजमहल' नामक रेलगाड़ी पर थोड़े से विदेशी पर्यटकों को राजस्थान के दुर्गों और राजमहलों की परिक्रमा कराके तथा उनके लिए पुष्कर और जैसलमेर में मरू-उत्सव तथा रंगारंग नृत्यों का आयोजन कर देने मात्र से काम चलने वाला नहीं है। कब तक राजस्थान इन्हीं दो कार्यक्रमों की बैसाखी के सहारे-पर्यटन को बढ़ावा देता रहेगा? पर्यटन के इस अरूद्ध विकास वाली दिशा में परिवर्तन जरूरी हैं। पर्यटकों की राजस्थान यात्रा के गुजरात के दर्शनीय स्थलों से जोड़कर यह काम बखूबी किया जा सकता है। यदि पर्यटकों के यात्रा कार्यक्रमों को गुजरात के सागर तट तक जोड़ा सके तो मरूस्थलीय राजस्थान के एक मार्गीय पर्यटन की ऊब को उत्साह और प्रसन्नता में बदला जा सकता है। पर्यटकों को राजस्थान और गुजरात के दर्शनीय और आकर्षक स्थानों पर घुमाने के लिए एक दूसरी नई तथा विलासिता के साधनों से युक्त रेलगाड़ी चलाकर इस दिशा में एक अच्छी पहल हुई है। अपने शान्त और सुरम्य पुलिनों और ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटकों में लोकप्रिय बनाकर गुजरात को भी काफी लाभ होगा। बालुका मरूस्थलों, पहाड़ियों, झीलों, दुर्गों और राजमहलों, वन्य जीव अभ्यारण्यों ऐतिहासिक और तीर्थ यात्रा के महत्व वाले, केन्द्रों और सागर पुलिनों को पर्यटकों के यात्रा कार्यक्रमों में शामिल करने से पर्यटन के अनेक प्रकारों को विकसित करने के नए अवसर उपलब्ध हो जाएंगे।

अन्तर्राज्यीय विवादों को अन्तर्राज्यीय पर्यटन के रूप में आयोजित करने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। अगामी शताब्दी में सारे संसार में पर्यटन सबसे बड़ी आर्थिक क्रिया होगी। कलकत्ता के ऐतिहासिक स्मारक तथा सुन्दर बन की दलदल और नम भूमियों में पर्यटन के संवर्धन के लिए उन्हें उड़ीसा के पुलिनों, ऐतिहासिक स्थलों, वन्य जीव अभ्यारण्यों, चिलका की जलक्रीड़ाओं, प्राचीन गुफाओं तथा जनजाति की बस्तियों के साथ मिला देने से बहुत अधिक लाभ होगा। इससे बंगाल में विकास की दृष्टि से अवरूद्ध पर्यटन को एक नया जीवन मिलेगा। महाराष्ट्र का पठार तथा मध्य भारत की पहाड़ियाँ

गुफाओं से भरी पड़ी है। उद्गम से लेकर मुहाने तक नर्मदा नदी का पूरा मार्ग प्राकृतिक आकर्षणों से परिपूर्ण है। नदी मार्ग में जल प्रपात, गहरी घाटियाँ और संगमरमर की चमचमाती चट्टानें आकर्षक और दर्शनीय हैं। नदी के पाट में बने द्वीपों पर प्राचीन भव्य मन्दिर हैं। यही नदी नर्मदा की धारा में झांकते हुए मांडू जैस विशाल दुर्ग भी हैं। यदि महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश मिलकर अन्तर्राज्यीय स्तर पर पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थानों के यात्रा-कार्यक्रम बनाएं, तो इन राज्यों का पर्यटन उद्योग अधिक लाभ कमा सकता है। दक्षिण बिहार में पर्यटन को और अधिक विकसित करने के लिए जनजाति के लोगों के रहन-सहन, बनाच्छादित पहाड़ियों, प्राकृतिक और कृत्रिम जलाशयों तथा वन्य-जीवन को पर्यटन के आकर्षण केन्द्र बनाना होगा। राँची के पठार के अतिरिक्त भी कुछ छोटे-छोटे और भी पठार हैं, जिन्हें पठार पर्यटन के विकास के लिए चुना जा सकता है। बौद्ध गया और उसके आस-पास के तीर्थ स्थानों और पूजा स्थलों को जोड़ कर बनाया गया यात्रा परिक्रमा पथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बन गया है; लेकिन यात्रा के नए मार्गों तथा नए दर्शनीय स्थलों और आकर्षण केन्द्रों की खोज का काम काफी पहले हो जाना चाहिए था।

ग – सिक्किम से लेकर मिजोरम तक और त्रिपुरा से लेकर अरूणाचल प्रदेश तक फैले उत्तर-पूर्व भारत के आठ राज्य असम की ब्रह्मपुत्र घाटी के माध्यम से एक दूसरे जुड़े हुए हैं। वैसे तो सामान्यतया इस संपूर्ण क्षेत्र को, उत्तर-पूर्वी भारत कह दिया जाता है। लेकिन इनमें से प्रत्येक राज्य की अपनी बिल्कुल अलग पहचान है, इनकी अपनी अलग विशिष्टताएँ हैं। मानव जातीय विविधताओं के साथ-साथ यहाँ हरे-भरे वनों से ढकी पहाड़ियों और घाटियाँ मनोहारी प्राकृतिक दृश्य तथा विविध प्रकार के वन्य जीव हैं। नृत्य-संगीत, त्यौहारों और उत्सवों में अभिव्यक्त यहाँ का सांस्कृति जीवन पर्यटकों को बड़ी सहजता से आकर्षित कर लेगा। यहाँ से अनेक स्थान हैं, जो हमें प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास का स्मरण कराने में समर्थ हैं। बहुत कुछ खोजने को शेष है तथा खोजकर पर्यटकों के लिए जानकारी उपलब्ध कराना भी उतना जरूरी है। आधुनिक सुविधाओं की कमी के कारण ही यहाँ पर्यटन का विकास नहीं हो पा रहा है। असम, मणिपुर, नागालैण्ड और त्रिपुरा की उपद्रवी और अशान्त दशाएँ पर्यटन के विकास में सबसे बड़ी बाधाएं है। कुछ दिन पहले की एक रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र का विकास पर्यटन के द्वारा हो सकता है।

गुवाहाटी हवाई अड्डे को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाना तथा विमान सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए एक नया संगठन बनाना इस रिपोर्ट के प्रमुख प्रस्ताव हैं। क्षेत्र के प्रमुख पर्यटक गन्तव्य स्थलों तक पहुँचने के लिए ब्रह्मपुत्र नदी के जल परिवहन को सुधारने तथा स्वदेशी और विदेशी पर्यटकों के प्रवेश पर लगे प्रतिबन्धों को हटाने से पर्यटन को निश्चय ही बढ़ावा मिलेगा। एक उत्साह वर्धक बात यह है कि यहाँ पारि-पर्यटन (इको टूरिज्म) के संवर्धन का प्रस्ताव है। इसमें कुछ चुने हुए तथा पारितन्त्र के अनुकूल पर्यटन के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं। इस प्रकार पर्यटन के विकास के साथ-साथ पारितन्त्र और स्थानीय संस्कृति भी सुरक्षित रहती है। गंगटोक और सिक्किम के आठ में से दो प्रसिद्ध तथा सुगम्य बौद्ध मठों को सक्रिय पर्यटन के विकास के लिये विकसित करने में पहल की गई। अरूणाचल में स्थित तावांग तथा भारत म्यनमार सीमा पर स्थित कुछ कुछ स्थान पर्यटकों के गंतव्य स्थल बन गए हैं।

शिलांग ऐसा पर्वतीय नगर है, जहाँ हर मौसम पर्यटन के अनुकूल है, लेकिन अभी तक यहाँ भीड़-भाड़ नहीं हुई है। मेघालय एक प्रमुख पर्यटक राज्य के रूप में उभर रहा है। राज्य सरकार पर्यटकों के आवास और गुफा तथा हैंग ग्लाइडिंग जैसे आकर्षण के नए रूपों की ओर विशेष ध्यान दे रही हैं।

घ. उत्तर पश्चिम के राज्यों में पंजाब और हरियाणा में प्राकृतिक आकर्षण बहुत ही कम है। लेकिन हरियाणा ने दिल्ली के निकट अपने पिकनिक स्थलों को सुन्दर और रमणीक बना कर, इस कमी को पूरा किया है। इसके साथ ही पर्यटक राज्यों हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर को जोड़ने वाले राष्ट्रीय महामार्गों पर पर्यटकों के पड़ावों पर आकर्षक और सुविधा संपन्न मोटलों का विकास भी किया है। कुरुक्षेत्र हरियाणा के केन्द्र में स्थित है। यहाँ हिन्दू तीर्थ यात्रियों की भीड़-भाड़ बनी ही रहती है।

पंजाब अब केवल तीन नदियों सतलुज, रावी और व्यास का ही राज्य रह गया है। नदियों के पानी के नहरों में चले जाने के कारण उनके मार्ग का पुराना आकर्षण समाप्त हो गया है। नदियों की इस दुर्दशा से हुई क्षति की पूर्ति नहरों के किनारों पर सुविधा संपन्न या नहरों के बीच में निर्मित कृत्रिम द्वीपों पर विश्राम गृह बना कर की जा सकती है। नहरों के दोनों ओर लगे वृक्षों से उनकी शोभा दुगनी हो गई है। नौकायन, विश्राम तथा ग्रामीण अंचल की हरियाली के दृश्यों का आनन्द लेने के लिये पर्यटक थोड़ा बहुत समय यहाँ लगा सकते हैं।

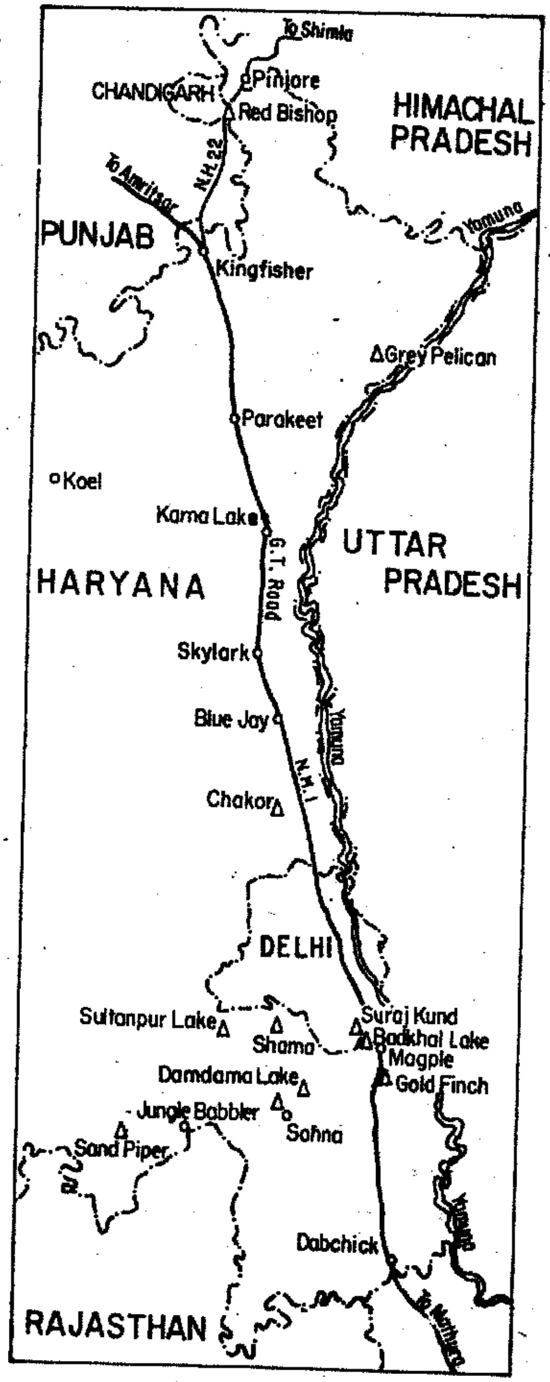

चित्र.29.11 हिमाचल प्रदेश का परिपथ

भाखड़ा तथा नांगल बांधों के निकट या नहरों में इस तरह से बने हुए विश्राम गृह इसके अच्छे उदाहरण हैं। इसके लिए प्रचार करना, मुख्य सड़कों से परिवहन की सुविधाएं देना तथा इन नहरी प्रर्यटक स्थलों पर उत्तम कोटि की सुख सुविधाओं की व्यवस्था करना आवश्यक है। सतलुज और व्यास के संगम पर बनी हरिके नाम की एक उथली झील है। शीत ऋतु में यहाँ पर्यटक जल क्रीड़ाओं के उत्सव में भाग लेने के लिए आते हैं। चण्डीगढ़ नियोजित नगर निर्माण का आदर्श नमूना है। इसके पास बनी सुखना झील तथा आस पास के दर्शनीय स्थल, शिवालिक पहाड़ियों के बीच पर्यटन के कुछ अन्य आकर्षण हैं। लेकिन गाद के जमा होने तथा जलीय खर-पतवार के कारण इन दो जलाशयों का 75% क्षेत्र पूरी तरह उपेक्षित पड़ा है। इन आकर्षणों को फिर से सुन्दर बनाकर तथा अमृतसर के हवाई अड्डे के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का बन जाने के बाद पंजाब पर्यटक मानचित्र पर उभर कर आ सकता है। पंजाब सुख सुविधा युक्त तीव्र गामी रेलगाड़ियों द्वारा अन्य स्थानों से जुड़ा है। लेकिन हवाई अड्डा एक ऐसा केन्द्र बिन्दु बन सकता है, जहाँ से राज्य के किसी भी हिस्से में मोटर मार्ग द्वारा चार घंटों में पहुंचा जा सकता है। ऐतिहासिक गुरूद्वारों का एक धार्मिक परिक्रमापथ बनया जा सकता है। ये गुरूद्वारें अतीत में घटे वीरतापूर्ण कारनामों के साक्षी रहे हैं। समाजिक सुधारों के भी ये अग्रदूत थे। इसे परिक्रमापथ से पंजाब के पर्यटन को चार चांद लग सकते हैं। इस क्षेत्र के अनेक स्थान भारत के स्वाधीनता संग्राम के गढ़ थे। अमृतसर का जलियाँवाला बाग, शहीद भगत सिंह का जन्म स्थान तथा भारत-पाक सीमा के निकट फिरोजपुर में सतलुज के तट पर उनका अन्त्येष्टि स्थल, सभी उन घटनाओं को स्मरण कराते हैं।

हिमालय के कुमायूँ और गढ़वाल क्षेत्र में पर्यटन के विकास की काफी संभावनाएँ हैं। लेकिन अभी तक पर्यटन की दृष्टि से इसका बिल्कुल उपयोग नहीं हुआ है। मसूरी और नैनीताल केवल दो लोकप्रिय पर्वतीय नगर हैं। यहां गर्मियों के व्यस्त महीनों में पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है। पर्यटकों की इतनी भारी अनियन्त्रित भीड़ के लिए सुचारू व्यवस्था इन नगरों के बस की बात नही है तथा यह भीड़ प्रदेश के पारितन्त्रीय विकास के लिए कोई वरदान भी नहीं हैं इन नगरों के निकटवर्ती पहाड़ियों पर उगे वनों का बड़ी तेजी से विनाश हो रहा है। निरंतर बढ़ते अपरदन के कारण जलस्रोत सूखते जा रहे है। पर्यटकों का प्रवाह यहाँ के होटल मालिकों का मुनाफाखोरी का धन्धा बन गया है। इसीलिये उन्होंने पहाड़ियों पर उपलब्ध चप्पा चप्पा भूमि पर होटल बना डाले हैं। उत्तर प्रदेश के इस हिमालयी क्षेत्र में छोटे-छोटे अनेक पर्वतीय पर्यटन स्थल हैं। सामान्य पर्यटकों ने तो कभी उनका नाम तक नहीं सुना हैं इनके विकास से दो लोकप्रिय पर्वतीय नगारों में मनोरंजन प्रिय पर्यटकों की भीड़ कुछ कम हो जाएगी। उत्तराखंड के प्राचीन मन्दिरों की की परिक्रमा करने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए ये स्थान विश्राम ग्रहों का कार्य कर सकते हैं।

इसमे कोई सन्देह नहीं है कि प्रतिवर्ष भारी संख्या में हिन्दू तीर्थ यात्री तथा कुछ विदेशी पर्यटक बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, हेम कुंड और रूपकुंड की यात्रा करते हैं। उत्तराखंड के इन चार तीर्थस्थानों में वर्ष के पहले आधे भ्राग् में चार-पाँच हजार तीर्थ यात्री प्रतिदिन आते हैं। यात्रियों की प्रतिवर्ष बढ़ती भीड़ के लिए यहाँ सुविधाएँ कम पड़ने लगी हैं।

अधिक समय लगा कर कठिनाई से पहँचने तथा सुविधाओं की कमी के कारण पर्यटकों की संख्या तो

घट जाती है, लेकिन तीर्थ यात्रियों पर इनका कोई असर नहीं होता। साहसिक कार्य से आनन्द लेने वाले पर्वतारोहियों और पैदल भ्रमण करने वालों को भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान और निकोबार तथा अरबसागर में स्थिति लक्षद्वीप समूहों में चयनित पर्यटन के लिए चुना गया है। प्राकृतिक पर्यावरण और जनजाति के लोगों की रक्षा करना ही इस प्रकार के पर्यटन का उद्देश्य है। पहले तो सुदूरस्थ स्थिति के कारण प्रकृति और द्वीप वासियों की जीवन पद्धति अपने आप ही सुरक्षित थी। लेकिन इन्हें पर्यटकों के लिए पूरी तरह से खोल देने के बाद, यह सब इतना आसान नहीं रह जाएगा। अंडमान के 300 द्वीपों में से अधिकतर द्वीप पहाड़ी हैं। ये द्वीप अपने वर्षा-वनों, वन्य जीवों, हरी भरी पहाड़ियों विशिष्ट जनजातियों और पोर्ट ब्लेअर के निकट स्थित रमणीक पुलिनों के लिए विख्यात हैं। अंडमान में एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाने के लिए स्टीमरों का सहारा लेना पड़ता है। अधिकतर स्टीमर पोर्ट ब्लेअर से चलते है। कलकत्ता और चेन्नई से विमान द्वारा या जलयान द्वारा पोर्ट ब्लेअर पहुंचा जा सकता है। खिली धूप, मचलता सागर और सुनहरी बालू इन द्वीपों को वरदान स्वरूप मिला है। कुछ द्वीप निर्जन हैं, वहां कोई बस्ती नहीं है। एक बार के भूकंप से कुछ पुलिन नष्ट हो गये थे, वे अब परित्यक्त अवस्था में हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानियों के अधिकार में रहते हुए भी इन द्वीपों को काफी हानि उठानी पड़ी है। लेकिन आने वाले पर्यटकों और यात्रियों के लिए इनके अपने विशिष्ट आकर्षण आज भी विद्यमान हैं। पोर्ट ब्लेयर कभी दण्डितों के बस्ती थी। यहां की कुख्यात और भयावह तंग कोठरियों वाली जेल में स्वतन्त्रता सेनानियों पर किये गए नृशंस अत्याचारों की कहानी सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और खून खौलन लगता है। यही जेल मुख्य भूमि से जाने वाले यात्रियों के लिये पवित्र तीर्थ स्थान बन गई है । जल के जीवजन्तुओं के दर्शकों को यहां के समुद्रों का स्वच्छ, पारदर्शी नीला जल अपार आनन्द प्रदान करता है। यहाँ के पुलिन पूर्ण विश्राम के लिये आदर्श स्थल हैं। निकोबार द्वीप समह के 19 द्वीपों में से केवल कार निकोबार में ही सबसे अधिक लोग बसे हैं। यह एक समतल द्वीप है। जहाज से उतर कर मोटर बोट द्वारा या उथले पानी में पैदल चलकर इस द्वीप तक पहुँचने में यात्री रोमांचित हो उठते हैं। नारियलों के झुरमुट तथा द्वीपवासियों की झोपड़ियाँ बड़ा ही सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करती है।

लक्षद्वीप समूह के 36 द्वीपों में से केवल 10 द्वीप बसे हुए हैं। बंगाराम के बस्ती विहीन द्वीप के अतिरिक्त चार और द्वीपों पर पर्यटकों को जाने की अनुमति है। पर्यटन के पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों की कीमत जान-बूझ कर अधिक रखी गई है। इससे पर्यटकों और यात्रियों की संख्या को सीमित रखा जा सका है। विदेशी पर्यटकों को केवल बंगाराम द्वीप पर जाने की अनुमति है। इन द्वीपों पर कोई नदी नहीं है। अतः पीने के पानी की कमी के कारण पर्यटकों की संख्या पर प्रतिबंध लगाए गए हैं। अभी तक समुद्र के जल के विलवीकरण की योजना नहीं शुरू की गई हैं। भारत सरकार ने बंगाराम द्वीप पर एक पाँच सितारा होटल बनाया है। अब पर्यटकों के लिए कुटिया बनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। जल क्रीड़ाओं के लिए उपकरण भी खरीदे गए हैं। प्रवाल भित्तियों से सुरक्षित शान्त अनूपों के सामने बालुकामय पुलिन हैं। नारियल के कुंजों में सरसराती पवन के द्वारा ही यहां की शान्ति भंग होती है। पर्यटकों को अनूप के स्टीमरों द्वारा केन्द में ले जाकर परदर्शी शीशे की तली वाली नावों में उतार दिया जाता है। ये नावें उन्हें समुद्र के विविध जीव-जन्तुओं के दर्शन कराती हैं। यहाँ के सबसे बड़े द्वीप अंद्रोथ पर एक मुसलमान पीर की प्राचीन समाधि है। धार्मिक पर्यटकों को इसी द्वीप पर जाने

के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

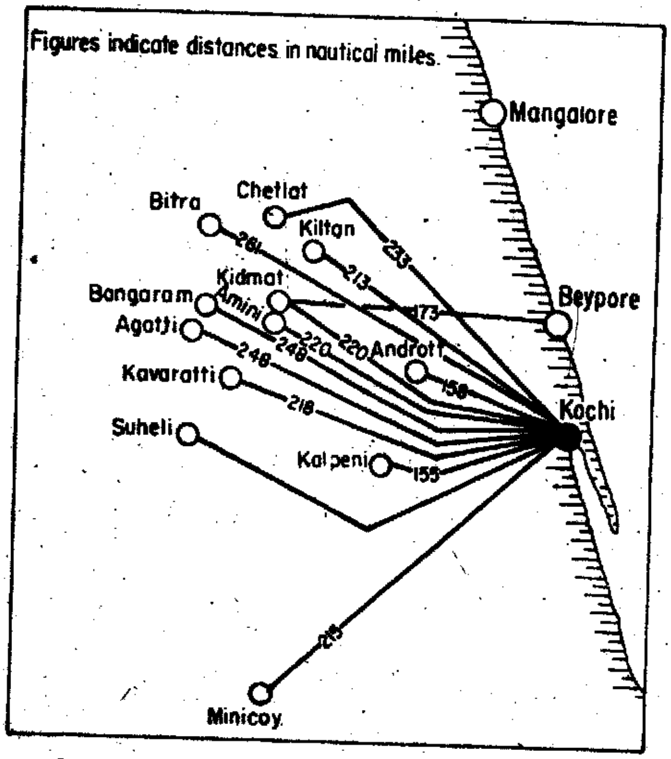

चित्र 29.12 कोच्चि से जल मार्ग द्वारा लक्ष द्वीप

- उत्तर में जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में केरल तथा गोआ तक विस्तृत इसका निकटवर्ती क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से सुविकसित हैं।
- शेष भारत में कहीं कहीं छोटे-छोटे पर्यटन क्षेत्र हैं।
- राजस्थान, कलकत्ता और क्षेत्रों में अनेक आकर्षणों के बावजूद पर्यटन का विकास थम सा गया है।
- संपूर्ण उत्तर पूर्व भारत, पंजाब, हरियाणा, हिमालयी गढ़वाल- कुमायूँ (तीर्थ यात्रियों को छोड़कर) और भारत के दोनों द्वीप समूहों में पर्यटन अर्द्ध विकसित हैं। इनमें से अनेक क्षेत्रों में पर्यटन की बहुत संभावनाएं हैं, जिनका उपयोग होना अभी शेष है।
- नई नीति को अमल में लाकर अवरुद्ध पर्यटन वाले क्षेत्रों को सक्रिय पर्यटन के सुविकसित क्षेत्रों की बराबरी पर लाया जा सकता है। अन्तर्राज्यीय आधार पर पड़ोसी राज्यों के दर्शनीय स्थलों को मिलाकर पर्यटन के पूर्वनिर्धारित कार्यक्रमों के परिक्रमा पथ बनाने से पर्यटन के विकास में आई शिथिलता को नई गति प्रदान की जा सकती हैं।

पाठगत प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों के लिए कारण बताइये :

(i) कश्मीर की समतल घाटी में भी स्थित मध्यम ऊँचाई वाले पर्यटक स्थल पर्वतीय नगरों के समान ही अच्छे हैं।

....

(ii) हिमाचल प्रदेश के शिमला, मनाली और डलहौजी में ही पर्यटकों की सबसे अधिक भीड़ रहती है।

....

(iii) हिमाचल प्रदेश का उत्तरी आधा भाग लोकप्रिय पर्यटन से बिल्कुल अछूता है।

....

(iv) आलप्पुल (आलेप्पी) को पूर्व का वेनिस कहा जाता है।

....

(v) उत्तर पूर्व भारत में पर्यटन अविकसित है।

....

(vi) पर्यटकों के लिए डल झील का आकर्षण समाप्त हो जाएगा।

....

2. निम्न राज्य किन पड़ोसी राज्यों के साथ मिल कर अन्तर्राज्यीय आधार पर पर्यटन के पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं।

(i) राजस्थान (ii) हिमाचल प्रदेश (iii) पश्चिम बंगाल

3. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(i) पर्यटन विकास के लिए पंजाब अपनी नहरों का किस तरह उपयोग कर सकता है?

(ii) हिमालयी प्रदेश में लोकप्रिय पर्यटन के लिए छोटे-छोटे पर्वतीय पर्यटक स्थलों के विकास से कौन सा क्या प्रमुख लाभ मिलेगा।

(iii) गोम्पा और गोपुरम में अन्तर बताइये। प्रत्येक के प्रमुख क्षेत्रों को मानचित्र में दिखाइये।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने भारत में पर्यटन के विकास के कारणों और कारकों को विषय में पढ़ा है। इस विकास के परिणामस्वरूप पर्वतों, पहाड़ियों, पुलिनों, सांस्कृतिक केन्द्रों, तीर्थ स्थानों, प्राचीन स्मारकों और खंडहरों में अनेक पर्यटक स्थल लोकप्रिय हो गए हैं। स्थिति, स्थिति की विशेषताओं, तथा पर्यटकों को आकर्षित करने में लिए विविध प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित करने की क्षमता के आधार पर पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण किया जाता है। पहुँचने के लिए सुगम्य मार्ग आवास तथा रहने के लिए अन्य सुविधाओं से युक्त स्थान अधिक लोकप्रिय बन गए हैं तथा पर्यटकों की भारी भीड़ को आकर्षित कर रहे हैं। कुछ ऐसे भी अल्प अज्ञात पर्यटक स्थल हैं, जहाँ पहुँचने और ठहरने में कठिनाइयों तक सामना करना पड़ता

है। लेकिन नदी नौकायन, पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग) पर्वतारोहण, जल और हिमक्रीड़ाओं तथा हैग-ग्लाइडिंग और पैरा ग्लाइडिंग तथा हैलीकोप्टर द्वारा हिमतरण जैसी साहस भरी क्रीड़ाओं को प्यार करने वाले पर्यटक ऐसे ही स्थानों को पसन्द करते हैं।

इस पाठ में आपने प्रादेशिक समीक्षा को भी पढ़ा है। इस समीक्षा से पता चलता है कि कुछ प्रदेशों ने बड़ी जल्दी अपनी प्राकृतिक सुविधाओं का लाभ उठाया है तथा दूसरे अभी तक भी इस दिशा में उदासीन बने हुए हैं। जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा केरल गोआ पट्टी में पर्यटन को गंभीरता से लिया गया है। अपने राज्य की अर्थ व्यवस्था को सुधारने तथा प्रादेशिक स्तर की स्तर की आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लिये पर्यटन का एक संपत्ति के रूप में उपयोग किया गया है।

जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा केरल गोआ-पट्टी में पर्यटन का अपेक्षाकृत सुविकसित रूप दिखाई पड़ता है। शेष भारत के इतने विशाल क्षेत्र में पर्यटन का कम विकास हुआ है। राजस्थान और कलकत्ता तथा उसके अड़ोस-पड़ोस में पर्यटन का विकास रूक सा गया है। इस यथास्थिति को दूर करने के लिए तथा पर्यटन के विकास में नवजीवन के संचार के लिये नए और उपयुक्त कार्यक्रमों का आयोजन जरूरी है। पर्यटन के विविध प्रकारों को बढ़ावा देने के लिए एक विकल्प यह है कि अंतर्राज्यीय आधार पर पड़ोसी राज्यों के साथ मिलकर पूर्वनिधारित पर्यटन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। पर्यटन के विकास की सामान्य योजनाओं के अभाव में संपूर्ण उत्तर-पूर्वी भारत, पंजाब और गढ़वाल कुमायूँ प्रदेश पर्यटन की दृष्टि से बहुत कम विकसित हैं। भक्ति भावना के वशीभूत धार्मिक पर्यटक धार्मिक महत्व के स्थानों और तीर्थस्थानों में भारी संख्या में पहुँचे रहते हैं। विशिष्ट उत्सवों के अवसरों पर तीर्थ स्थानों में उमड़ने वाली भारी भीड़ के कारण बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। पर्यटन के व्यस्ततम समय में यही हाल पर्यटक स्थलों का भी होता है।

पाठान्त प्रश्न

1. आधुनिक पर्यटन के संवर्धन को निर्धारित करने वाले कारक कौन से हैं?
2. यात्रा पर्यटन को प्रभावित करने वाला आकर्षक और प्रेरक शक्तियों में अन्तर बताइये।
3. निम्नलिखित कथनों के समूह में से सही कथन पर निशान लगाइये।
   (क) अधिकतर पर्वतीय विनोद स्थल हिमालय में समुद्रतल से 1200 और 2100 मीटर की बीच की ऊँचाई पर स्थित हैं।
   (ख) दक्षिण भारत में नीलगिरि में उतने ही पर्वतीय पर्यटक स्थल हैं, जितने हिमालय में हैं।
   (ग) अधिकतर पर्वतीय पर्यटक स्थल 800 और 1200 मीटर की बीच की ऊँचाई पर स्थित हैं।
   (घ) भारत के प्रत्येक राज्य में कम से कम एक पर्वतीय या पर्यटक स्थल हैं।

(ii) (क) किसी नगर की निकटता से पर्वतीय पर्यटक स्थल को स्थिति संबंधी बड़ा लाभ मिलता है।
   (ख) दुर्गम होते हुए भी नगर में निकटता इसके लिए लाभकारी होती है।

(ग) पर्वतीय पर्यटक स्थल की नगर से निकटता पर्यटकों की संख्या घटा देती है।

(घ) पर्यटकों के लिये आधुनिक सुविधाओं की कमी के बावजूद नगर से निकटता लाभकारी होती है।

(iii) (क) कोंकण और गुजरात के तट पर पुलिन पर्यटन का विकास नहीं किया जा सकता।

(ख) अछूते और शान्त होने पर ही पुलिन लोकप्रिय होते हैं।

(ग) गोआ और कोंकण तट पर पुलिन पर्यटन सुविकसित है।

(घ) पुलिनों के निकट जल पर्यटन के विकास में पुलिन पर्यटन को हानि होती है।

(iv) (क) व्यापार की समृद्धि ने तीर्थ स्थानों की संख्या में वृद्धि की है।

(ख) भूमि की पूजा में विश्वास होने के कारण ही तीर्थ स्थानों की संख्या बढ़ी है।

(ग) धर्म और संप्रदाय की संख्या के बढ़ने से ही तीर्थ स्थानों की संख्या कई गुनी हो गई है।

(घ) दुर्गों और राजमहलों के दर्शनों से ऊबकर ही लोगों ने तीर्थ स्थान बनाए हैं।

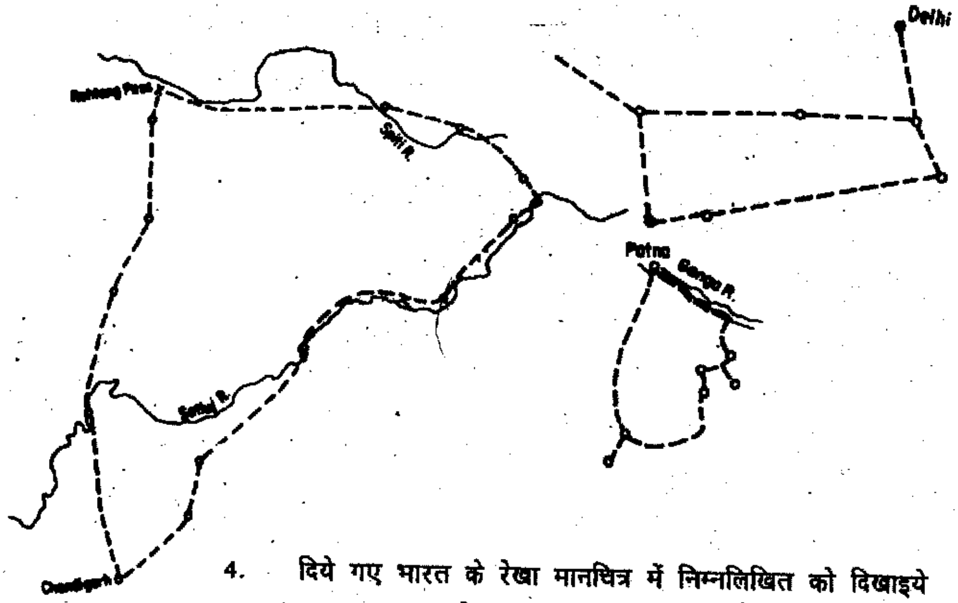

4. दिये गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को दिखाइये
राजस्थान का दुर्ग नगर, वे स्थान जहाँ मक्का और शाह हमादान मस्जिदें स्थित हैं, वे स्थान जहाँ जालियाँवाला बाग तथा सेलुलर जेल स्थित हैं, साबरमती आश्रम, स्थान जहाँ साँची स्तूप, टाबो मठ था, पश्चिम बंगाल का पर्वतारोहण संस्थान हैं।

5. यहाँ तीन सामान्य परिक्रमापथ दिये गए हैं-
(i) स्कैच पर अंकित चित्रों के सामने आगरा, ग्वालियर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, उदयपुर, माण्डू, उज्जैन और इंदौर (क) स्कैच में प्रदर्शित किन किन नगरों में दुर्ग है?
(ii) उन तीर्थ स्थानों की स्थिति बताइये, जिन्हें हिन्दू, बौद्ध, जैन और मुसलमान पवित्र मानते हैं। और उनके नाम स्कैच में लिखिए। (ख) (iii) स्कैच में दिये गए अधिक से अधिक स्थानों के नाम लिखिए

6. निम्नलिखित में अन्तर स्पष्ट कीजिए–
(i) पर्वतारोहण और पैदल भ्रमण (ii) नदी नौकायन और स्कूबा गोताखोरी (iii) स्केटिंग और हिमतरण (स्कीइंग) (iv) पैरा ग्लाइडिंग और हैंग ग्लाइडिंग (v) अवरूद्ध और सक्रिय पर्यटन

7. अन्र्राज्यीय पूर्व निर्धारित (पैकेज) पर्यटन कार्यक्रमों के क्या लाभ हैं?

8. पर्यटन के निम्नलिखित आकर्षणों का प्रखर द्रष्टा के मस्तिष्क पर पड़ने वाले प्रभाव को बताइये भूदृश्य में जल की उपस्थिति, विरदित (डिसेक्टेड) उच्चावच, कटक और पहाड़ी शिखर, पर्यटन केन्द्रों की श्रृंगारिक सजावट।

9. नीचे शब्दों के कुछ समूह दिये गये हैं। इन समूहों में से अप्रासांगिक शब्द को काट दीजिए
(i) उज्जैन / काँगड़ा / जम्मू/ वाराणसी / कोहिमा
(ii) ग्वालियर / लोहागढ़ / दिलवाड़ा / जैसलमेर / गोलकुंडा
(iii) देव टिब्बा / रूपकुंड / हरमुख / राथांग/ शिवलिंग
(iv) हल्दी घाटी/ ऋषिकोंडा / माल्पी / गोपालपुर / अहमदपुर/ माँडवी

10. निम्नलिखित के कारण बताइये।
(i) प्रवाल सागर स्कूबा गोता खोरी के लिए अधिक उपयुक्त है।
(ii) बाघों के लिए अनेक अभयारण्य हैं, लेकिन हंगुल, सोहन चिड़िया और गैंडे के लिए बहुत कम।
(iii) उत्तराखंड में बड़ी भारी संख्या में धार्मिक पर्यटक आते हैं, लेकिन फिर भी यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अल्प विकसित है।
(iv) लोकप्रिय पर्यटक स्थलों पर अधिकाधिक होटलों के निमार्ण से आवास की समस्या का समाधान तो होता है, लेकिन दूसरी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।
(v) गुफा पर्यटन का विकास करके मेघालय ने एक नई पहल की है।
(vi) लक्ष द्वीप के पूर्वनिधारित (पैकेज) पर्यटन कार्यक्रमों की कीमत बहुत ऊँची रखी गई।

अपने उत्तरों को जाँचिए

पाठगत प्रश्न 29.1

1. (i) वेतन सहित छुट्टयों का प्रावधान (ii) टैवल कन्सेशन
2. (i) सुविधाएँ (ii) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (iii) आय (iv) प्रेरक/आकर्षक (v) मध्य
3. सकरात्मक कारक (i) व्यक्ति जिनके पास अवकाश तथा व्यय करने की क्षमता (ii) पर्यटक गन्तव्य स्थलों पर दृश्यात्मक तथा सांस्कृतिक आकर्षण (iii) सुविधाएँ विकसित परिवहन टैवल कन्सेशन तथा सभी पर्यटक स्थलों पर होटलों में आराम देह आवास

पाठगत प्रश्न 29.2

1. (i) शिमला (ii) पहलगाम (iii) नैनीताल
2. (i) 'घ' के साथ (ii) 'ग' के साथ (iii) 'ख' के साथ (iv) 'ङ' के साथ (v) 'क' के साथ
3. (i) नारियल के कुजों के बीच स्थित स्वास्थ्यवर्धक पर्यटक स्थल (ii) समुद्र का शान्त शीतोष्ण जल (iii) शार्क मुक्त (iv) जल तरण और तरंग क्रीड़ा जैसी क्रीड़ाओं के लिए आदर्श स्थल है।
4. विरदित दृश्य भूमि, किसी नगर से निकटता, हिमरेखा से निकटता।
5. (i) जुहू (ii) पुरी (iii) मरीना

पाठगत प्रश्न 29.3

1. (i) बौद्ध (ii) सिख (iii) जैन (iv) पावापुरी (v) मुसलमान (vi) ईसाई
2. (i) कर्नाटक (ii) पंजाब (iii) राजस्थान (iv) मध्य प्रदेश (v) पश्चिम बंगाल (vi) जम्मू और कश्मीर (vii) कर्नाटक (viii) गुजरात
3. उत्तर में बद्रीनाथ, पश्चिम में द्वारका, पूर्व में जगन्नाथ पुरी तथा दक्षिण में रामेश्वरम्

पाठगत प्रश्न 29.4

1. (i) औली (ii) पैदल भ्रमण (iii) पैरा ग्लाइडिंग (iv) गौल्फ (v) गुफा पर्यटन (vi) धूप का खिलना (vi) ओरछा (vii) हिमनदित
2. गुजरात में गिर, कश्मीर से डाचीगाम, असम में काजीरंगा या मानस, राजस्थान में भरतपुर के निकट घाना, केरल में पेरियार।
3. भारतीय पर्वतारोहण संस्थान पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, उत्तर प्रदेश में उत्तर काशी और हिमाचल प्रदेश में मनाली में स्थित हैं। वे उपयुक्त लोगों को शैल आरोहण पर्वतारोहण और हिमतरण का प्रशिक्षण देते हैं। वे उपकरण भी उपलब्ध कराते हैं, शीतकालीन खेलों का आयोजन करते हैं तथा संबंधित कार्यक्रमों की प्रदर्शिनियाँ लगाते हैं। वे पर्वतारोहण तथा पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग) अभियानों में सहायता भी करते हैं।

4. कनाडा और फ्रांस में हैलीकोप्टर हिमतरण पर प्रतिबंध लगा दिया है। कश्मीर घाटी बड़ी है, इसलिए हैलीकोप्टरों का शोर जीवजन्तुओं को परेशान नहीं करता। यह श्रीनगर के मुख्य शहर से दूर भी नहीं है। मौसम के खराब होने पर पर्यटकों को आसानी से वापस भी लया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 29.5

1. (i) समुद्र तल से कश्मीर घाटी की औसत ऊँचाई 1500 मीटर होने के कारण।
   (ii) लोक प्रिय पर्यटक स्थल मैदानों के अपेक्षाकृत निकट है। यहाँ पहुँचना आसान है। होटलों में सस्ती महँगी सभी तरह की पर्याप्त आवास सुविधा उपलब्ध है। ये स्थान पर्यटकों को इसलिए आकर्षित करते हैं; क्योंकि यहाँ सुंदर पर्वतीय दृश्य हैं, हिम के दृश्य हैं, पर्वतीय जलवायु है, घूमने के लिए परिक्रमा पथ हैं और शीत कालीन खेलों का अयोजन होता है। (कोई एक)
   (iii) अधिक ऊँचाई वाले ठंडे मरूस्थल के अनुरूप यहां की जलवायु कठोर है। देश के घने बसे भागों से दूर है तथा उपयुक्त आवासों का नितान्त अभाव है। इसीलिए यहाँ लोकप्रिय पर्यटन का विकास हुआ है। (कोई एक)
   (iv) आलप्पुल (अलेप्पी) केरल की सबसे लंबी अनूप (लैगून) झील के दक्षिणी छोर पर स्थित है। सर्पनौका दौड़ का प्रारंभ बिन्दु वेनिस की तरह नावों/स्टीमरों द्वारा उत्तर में कोच्चि तक तथा दक्षिण में कोल्लम् (क्विलोन) तक आना जाना हो सकता है।
   (v) पर्यटन के विकास की संभावनाओं की उपेक्षा कम सुविधाएँ तथा आतंकवाद और उग्रवाद से ग्रस्त हैं। (कोई एक)
   (vi) जलीय खर पतवार के उगने के कारण, गाद भरने के कारण, होटलों के निर्माण से उत्पन्न मलबे के गिराने के कारण डल झील निरंतर सिंकुड़ती जा रही है। होटलों और हाऊस बोटो का अनुपचारित मलजल झील में बहाया जा रहा है। प्रतिवर्ष और अधिक प्रदूषित होती हुई तथा सिकुड़ती हुई झील का पर्यटकों के लिए आकर्षण समाप्त हो सकता है। (कोई एक)
2. (i) गुजरात के साथ राजस्थान (ii) जम्मू-कश्मीर और उत्तर प्रदेश के साथ हिमाचल प्रदेश (iii) उड़ीसा के साथ पश्चिम बंगाल।
3. (i) नहरों में या नहरों के किनारे विश्राम गृह बनाकर तथा प्रोत्साहन के लिए मुख्य सड़कों से इनकी ओर परिवहन की सुविधा जुटा कर।
   (ii) इससे कुछ प्रमुख पर्यटक स्थलों पर भीड़-भाड़ कम हो जाएगी, क्योंकि पर्यटकों की भीड़ के एक स्थान पर केन्द्रित होने से अनेक समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।
   (iii) गोम्पा लद्दाख, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश के कुछ भागों तथा हिमाचल प्रदेश के लाहल स्थिती में यत्र तत्र स्थित बौद्ध मठों को कहते हैं। तमिलनाडु और इसके निकटवर्ती क्षेत्र के नगरों में निर्मित अनेक मन्दिरों के विशाल ऊँचे ऊँचे सिंह द्वार या प्रवेश द्वार को गोपुरम कहते हैं।

पाठान्त प्रश्नों के उत्तर संकेत

(1) देखिए 33.3 अन्तिम अनुच्छेद को छोड़कर।

(2) 33.3 के अनुच्छेद 2 को देखिए।

(3) iक, iiक, iiiग, ivग

(4) इस पाठ में दिए गये मानचित्र की सहायता लीजिए।

(5) इस पाठ में दिए गये मानत्रिों की मदद लीजिए।

(6) i. 33.4 का घ देखिए, ii. 33.4 में जल क्रीड़ाओं पर अनुच्छेद देखिए 1 (iii) 33.4 के अंतर्गत शीत कालीन क्रीड़ाओं पर अनुच्छेद देखिए। (iv) 33.4 'घ' में पैरा ग्लाइडिंग और हैंग ग्लाइडिंग पर अनुच्छेद देखिए। (v) 33.5 'ख' का दूसरा अनुच्छेद देखिए।

(7) 33.4 'क' में हिमालय प्रदेश पर अन्तिम अनुच्छेद देखिए तथा 33.5 'ख' में अन्तिम से पहला अनुच्छेद भी देखिए।

33.4 'क' के तीसरे-चौथे अनुच्छेद को देखिए इसी में पर्वतीय तथा पहाड़ी पर्यटक स्थलों के वर्णन को भी पढ़िए।

(9) (i) कोहिमा (ii) दिलवाड़ा (iii) रूप कुँड (iv) हल्दी घाटी

(10) (i) 33.4 घ में जलक्रीड़ाओं का अनुच्छेद देखिए

(ii) क्योंकि प्रजातियाँ दुर्लभ हो गई है तथा विलोपन के कगार पर हैं।

(iii) प्राचीन काल से जन मानस ने रची-बसी भक्ति भावना के तीर्थयात्री तीर्थ स्थानां पर भारी संख्या में जाते हैं। उन्हें पर्यटकों के लिए जुटाई गयी सुविधाओं की कोई परवाह नहीं होती। उत्तराखंड के अन्य आकर्षक स्थान अभी बहुत कुछ अल्पविकसित हैं।

(iv) भारी संख्या में होटलों के अनियोजित निर्माण से केवल होटल मालिकों को भारी मुनाफा होता है। इस तरह वनों का विनाश होता है तथा भंजनशील पर्यावरण का स्थान कंक्रीट से बने भवन ले लेते हैं। यही सही है कि वे पर्यटकों की निरंतर बढ़ती संख्या के लिए आवास उपलब्ध कराते हैं, लेकिन विकास पारिमैत्री वाला नहीं है।

(v) 33.4 'घ' के अन्तर्गत गुफा पर्यटन को देखिए।

(vi) 33.5 'ग' के अन्त में लक्षद्वीप के पर्यटन पर लिखित अनुच्छेद को देखिए।